वर्षः 4 अंकः 8 जुलाई 2020 जोधपुर (राजस्थान) मूल्यः 25 रुपए

समराथल न्यूज पोस्ट

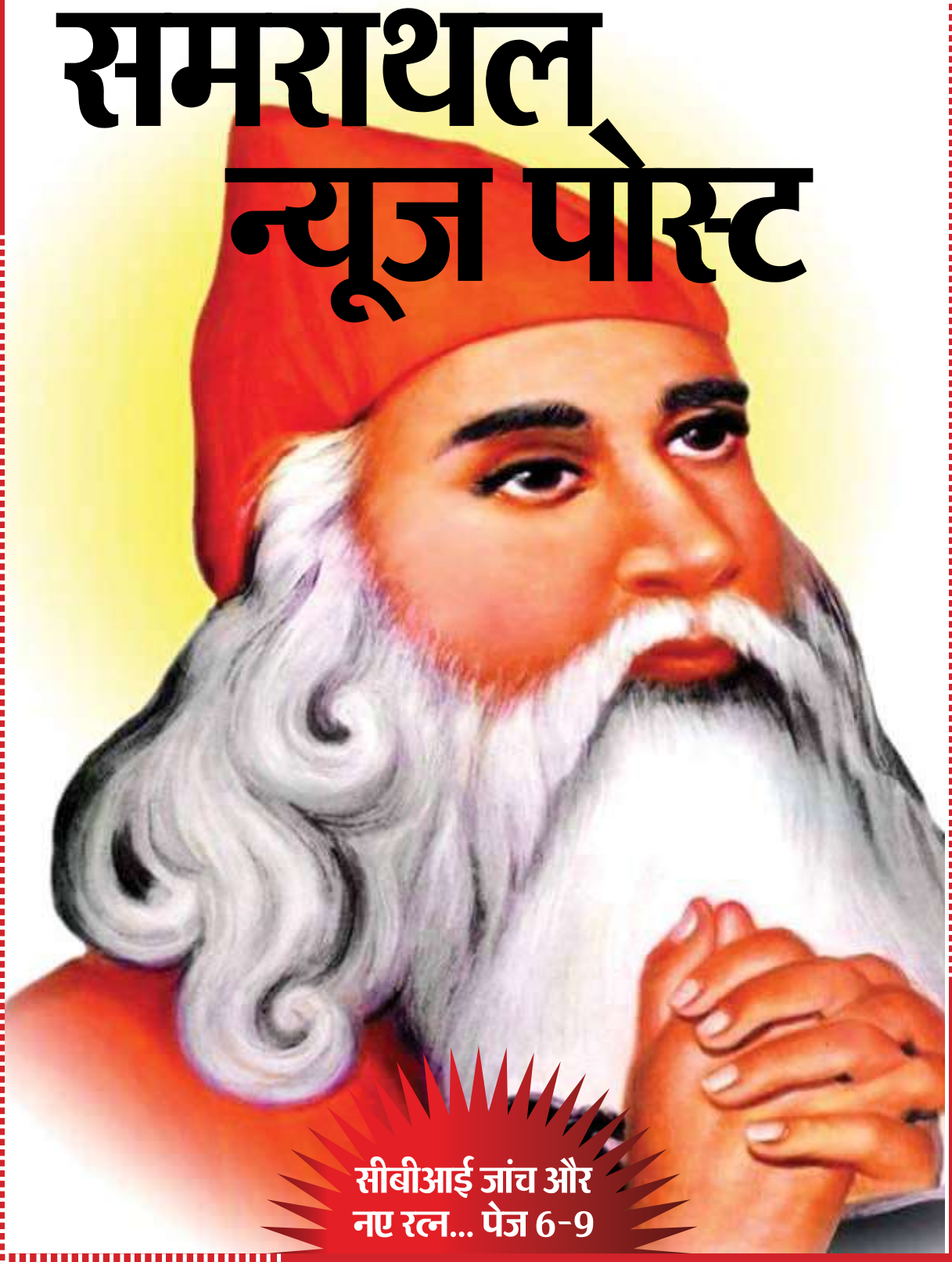

सीबीआई जांच और
नए रत्न... पेज 6-9

With Best Compliments From .....

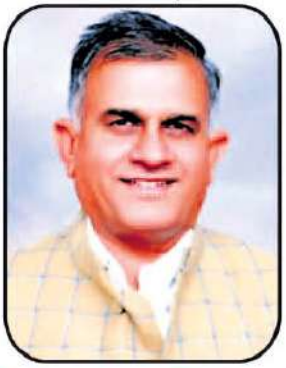

Devendra Bishnoi

Secretary-All India Bishnoi Mahasabha

Yashpal Bishnoi

DEVENDRA GROUP

- Devendra Infraprojects Pvt. Ltd.
- Devendra Construction Company
- Nageshwar Construction Company
- Sunil Construction Company
- Shri Hari Construction Company

H.O. : 41-B, Umaid Bhawan Road, Near Sun City Art Emporium, Jodhpur (Raj.)

B.O. : 'The Orient' Plot No. 7, Jai Ambey Colony, Civil Lines, Jaipur (Raj.)

◆Tel : 0291-2510080 ◆ Fax : 0291-2514899 ◆ Mob. : 9414128780, 9414474830

◆E-mail : devjiburia@gmail.com ◆ f : www.facebook.com/Devendrabishnoi29

29 धर्म की आखड़ी, हिरदे धरियो जाय।
जांभोजी किरपा करी, नाम विश्णोई होय।।

समराथल न्यूज पोस्ट

मासिक समाचार पत्रिका

ओमप्रकाश
संपादक-प्रकाशक

सुरेशकुमार लोल
मुख्य संपादक 9166630130

सुनील कांवा
प्रबंधक
9001800789

कार्यालयः प्लॉट नं. 30, थोरियों की ढाणी,
पाल बालाजी, पाल रोड, जोधपुर राजस्थान

9166630130
samrathal.newspost@gmail.com

मूल्य/एक प्रतिः 25 रुपए
वार्षिकः 300 रुपए

समराथल न्यूज पोस्ट में प्रकाशित सामग्री में प्रस्तुत रचनाएं, लेख लेखकों व रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं। इनसे संपादक का सहमत होना जरूरी नहीं है। विचारों से संबंधी आपत्तियों के लिए लेखक ही उत्तरदायी है। इस बारे में उनसे संपर्क किया जाए।

सभी प्रसंगों का न्याय क्षेत्र जोधपुर रहेगा।

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक ओमप्रकाश द्वारा माणक ऑफसेट प्रिंटर्स, एमजीएच रोड, जोधपुर से मुद्रित तथा प्लॉट नंबर 30, थोरियों की ढाणी, पाल बालाजी, पाल रोड, जोधपुर राजस्थान से प्रकाशित

RNI. No. RAJMUL/2016/70544

संपादक-ओमप्रकाश

samrathal.newspost@gmail.com

विषय अनुक्रमणिका

बिश्नोई महासभा विष्णुदत्त प्रकरण में पैरवी करने पर कुलदीप विश्नोई को विश्नोई रत्न से नवाज़ेगी पेज 6 से 9

Pg 10

शिकारः लॉकडाउन में एकाएक बढ़ी घटनाएं

» नेताजी...कमेंट से डरे विधायक 05
» इंस्पेक्टर विष्णुदत्त मामले की सीबीआई जांच 6-9
» ग्रेट लीडर्स...स्व. रामसिंह विश्नोई का किस्सा 13
» रामड़ावास में एकता का दे रहे हैं संदेश 14
» रेगिस्तान में केसर की महक 15
» हमारे नियम...पांच दिन ऋतु धर्म 16
» खेजड़ली में प्याऊ निर्माण पर पंगा 17
» मोरे छाया न माया लोहू न मासूं रक्तूं न... 19
» कोरोनाः जांभोजी के नियमों की प्रासंगिकता... 20

Pg 17

टिक टॉकः मंदिर में वीडियो शूट करने पर बवाल

आजादी के परवाने मेवाड़ी प्यारचंद विश्नोई

पेज-22

ग्रेट पर्सन सत्संग से बदला पूर्व सैनिक का जीवन

पेज-19

कोरोना आत्ममंथन का अवसर
29 नियमों की पालना में हम कहां पर हैं

निवण प्रणाम.

पिछले तीन महीनों से पूरी दुनिया में कोरोना को लेकर एक प्रकार से दहशत का माहौल है। किसी देश के पास इसका उपचार नहीं है, दावे में भले ही सभी देश वेक्सीन बनाने में जुटे हुए हैं लेकिन फिलवक्त सफलता दूर प्रतीत लग रही है। अब तक विश्व में कोरोना से लाखों लोगों की मौत हो चुकी है और कई लाख संक्रमित हैं। आए दिन नए केस आ रहे हैं। सारे देशों के पास एक ही उपचार है-सोशल डिस्टेंस। कोई संक्रमित हो गया तो उसके लिए पृथकवास। बचाव के लिए हेल्दी भोजन, हाथ धोना, साफ सफाई रखना और बाहर से आने पर स्नान करना। इस सरकारी गाइडलाइन में वे ही बातें हैं जो गुरु जंभेश्वर महाराज प्रदत्त 29 नियमों में हैं। विश्नोई समाज सदियों तक इसका कड़ाई से पालना करता आया। पिछले दो दशकों से इसमें उस तरह की गिरवट देखी गई है जैसे किसी देश की नंबर वन कंपनी के दिवालिया होने पर उसके शेयर गिरे हों। एक पूरी पीढ़ी धर्म नियमों से विमुख सी हो गई। इसके पीछे आधुनिकता की दौड़ और खुद की चमक दमक के प्रति अज्ञानतापूर्वक झुकाव बड़ा कारण रहा है। लोग दुनिया में सबसे सर्वश्रेष्ठ होने के गर्व को भूल गए। कोरोना आया तो जांभोजी के नियमों की प्रासंगिकता और बढ़ा दी। हमारे नियमों में हैं कि 5 दिन ऋतिवंती नारी पृथक रहे। रसोई से दूर रहे। यह विज्ञान आधारित है कि इन पांच दिनों में संक्रमण का खतरा रहता है। मगर आधुनिकता से यह भी नियम कमजोर हो गया है। इसी तरह 30 दिन सूतक। इस नियम के पीछे सिर्फ 30 दिन का प्रश्न नहीं हैं बल्कि जच्चा-बच्चा के स्वास्थ्य ही मुख्य है। यही वजह है कि अन्य लोगों से हष्ट पुष्ट होते हैं, जहां यह नियम कमजोर पड़ा, वहां की नई पीढ़ियां भी कमजोरी को ढो रही है। कोरोना में भी 14 व 28 दिन अलग रहने का नियम है। चूंकि कोरोना का कोई उपचार नहीं आया है, ऐसे में क्रमशः 14 व 28 दिन में मरीज को अलग वातावरण में वह सब गतिविधियां करवाई जा रही जिससे उसकी शारीरिक व मानसिक क्षमता विकसित हो। यही कारण 30 दिन के सूतक के पीछे हैं। बहुत से लोगों को याद होगा कि पहले कहीं भी बाहर जाकर आते थे तो घर में मां-दादी-नानी यह सुनिश्चित करती थी कि वह स्नान करने के बाद ही घर में प्रवेश करे। इसी तरह की गाइडलाइन कोरोना में है कि आप बाहर जाकर आए हों तो सबसे पहले गर्म पानी से स्नान करें और कपड़े धोएं। इसी तरह हर किसी से मिलने, बिना काम कहीं जाने व दूसरे लोगों से दूरी बनाने का नियम पहले सख्ती से माना जाता था लेकिन नई पीढ़ी को इसमें हीनता नजर आ रही है। ऐसे में वे खुलकर जी रहे थे कि कोरोना ने उनका हाथ थामकर कहा कि इस रास्ते धीरे चलो। दोस्त सर्किल के नाम पर मांसाहारियों व शराबियों से संपर्क कहीं का नहीं छोड़ेगा। कोरोना में भी सरकार की इसी तरह की गाइडलाइन है कि सोशल डिस्टेंस बनाए रखें। बिना काम बाहर न निकलें और न ही मिलें, न जाने कौन कोरोना लिए घूम रहा है। कहने का अर्थ है कि कोरोना ने हमें आत्ममंथन का मौका दिया है कि 29 नियमों पर चलें। - **ओमप्रकाश**

ये सब अनऑफिशियली है नेताजी...

कमेंट से डरे विधायक

एक विधायक महोदय कोरोना काल के दौरान रोज प्रेस विज्ञप्ति निकालकर लोगों को घर में ही रहने का आह्वान करते हैं। एकाध अधिकारियों की बैठकें भी ली लेकिन इसके बाद कहीं फील्ड में नजर नहीं आए। जब तक यह सामने नहीं आया कि कोरोना से अब लोग ठीक होने लगे हैं, तब तक वे पूरी तरह घर में ही कैद होकर रह गए। जब कोरोना के मरीज अस्पताल से स्वस्थ होकर घर लौटने लगे तो विधायक भी फील्ड में नजर आने लग गए। इसी दौरान उन्होंने अपने निवास पर किसी दूसरे विधानसभा क्षेत्र के लोगों से बैठक की। वे खुश थे कि उनका प्रभाव मेरे विधानसभा क्षेत्र से बाहर भी होने लगा है। उन्होंने अपने मीडिया प्रभारी को इस बैठक के फोटो सोशल मीडिया पर जानकारी के साथ पोस्ट करने को कहा। प्रभारी ने वैसा ही किया लेकिन पोस्ट होते ही जनता ने कमेंट में तीर चलाना शुरू कर दिया कि अभी कोरोना खत्म नहीं हुआ है। बेहतर होता कि आप मास्क लगाते और डिस्टेंस में रहकर बैठक लेते। ऐसे में विधायक को तुरंत पोस्ट डिलीट करानी पड़ी।

शिकायत में सब बराबर

बात लॉकडाउन के दौरान बढ़ते शिकार प्रकरणों के दौरान की है। खासकर जोधपुर संभाग में वन्यजीवों का शिकार बहुतायत में होने लगा। इसे लेकर वन्यजीव प्रेमियों में रोष था। सदा सहज उपलब्ध रहे मंत्रीजी को हर कोई फोन लगाने लगा। वे परेशान हो गए। अब सभी को क्या जवाब दे और वे भी आखिर क्या करे, महकमे के पास ही कोई संसाधन नहीं। वे लोगों को आश्वस्त करते करते थक गए। उनके कान शिकायतें सुन सुनकर पक से गए। एक दिन उनके पास भी मौका आया जब मुख्यमंत्री से सभी मंत्रियों से फीडबैक लिया। तब इन मंत्री महोदय ने कहा कि-लॉकडाउन में शिकार की घटनाएं बहुत बढ़ गई है, हमारे पास संसाधन कम है, कृपया आप पुलिस महकमे को निर्देशित करावें कि शिकारियों को पकड़ने में हमारा सहयोग करें। मुख्यमंत्री ने भी ठीक वैसा ही आश्वासन दिया, जैसा मंत्रीजी पर्यावरणप्रेमियों को देते आए। इससे लोगों में यह चर्चा बन गई कि कुछ हो न हो, शिकायत करने में तो मंत्रीजी ने आम जनता की बराबरी कर ही ली।

लॉकडाउनः मृत्युभोज में नेताजी

कोरोना महामारी से निपटने के लिए मार्च में ही लॉकडाउन लग गया था। इस दौरान धारा 144 लगाई गई ताकि कोरोना संक्रमण की चेन को तोड़ा जा सके और आगे से आगे न फैलें। जबकि गांवों में कई लोगों ने इसे मजाक बना लिया। लॉकडाउन के दौरान ही कई बुजुर्गों के निधन के बाद ग्रामीण मृत्युभोज करते दिखे। इस दौरान न तो धारा 144 का डर दिखा और न ही कोरोना फैलने का। हैरानी की बात है कि कई जगह तो ऐसे मामले भी सामने आए जब लॉकडाउन का हवाला देकर मृत्युभोज टालने की वजह को भी नहीं माना गया। पंचों का कहना था कि गांवों में कोई कोरोना नहीं है। इसी अतिविश्वास के चक्कर में एक नेताजी की नींद हराम हो गई। दरअसल, वे पूरे लॉकडाउन के दौर ान शोकाकुल परिवारों को ढांढ़स बंधाने जा रहे थे। एक बार जिस परिवार में गए, उसके परिवार में ही एक व्यक्ति कोरोना पॉजिटिव आ गया। इसकी जानकारी नेताजी को लगी तो उनकी नींद उड़ गई। धीरे-धीरे बात बाहर आ गई कि साब भी यहां आए थे। इन नेताजी को वापस चैन उस वक्त आया जब उस पॉजिटिव व्यक्ति के परिजनों व संपर्क में आए सभी लोगों की रिपोर्ट निगेटिव आई। इसके बाद वे फोन कर शोक जताने लगे और कहते-भाइड़ा लॉकडाउन है, नीं तो आंऊर।

आक्रोश से बन पाई बात...

विष्णुदत्त मामले में युवाओं ने सोशल मीडिया पर अभियान चलाया, तब जागे

क्या सीबीआई जांच से मिल पाएगा न्याय...

रिपोर्ट...
सुरेशकुमार लोल. बिलाड़ा
9166630130

चूरू में राजगढ़ थानाधिकारी रहे विष्णुदत्त विश्नोई के आत्महत्या प्रकरण को लेकर समाज के युवा वर्ग में जबरदस्त आक्रोश दिखा। इसी के बदौलत पूरा मामला आगे बढ़ा। सोशल मीडिया पर जस्टिस फॉर विष्णु अभियान से अन्य संगठन भी आगे आए और परिवार को न्याय दिलाने के लिए सीबीआई से ही जांच कराने की मांग की। फिर महासभा संरक्षक कुलदीप बिश्नोई के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल मुख्यमंत्री से मिला।

विष्णुदत्त विश्नोई की आत्महत्या पर आज भी लोगों को यकीन नहीं हो पा रहा। पुलिस को क्वार्टर में दो सुसाइड नोट मिले। एक उन्होंने अपने माता-पिता के नाम लिखा है तो दूसरा एसपी के नाम। पिता के नाम से लिखे सुसाइड नोट में थाना प्रभारी ने लिखा है- पता है कि ये कायरों का काम है, लेकिन मुझे माफ करना। जबकि एसपी के नाम से सुसाइड नोट में लिखा है कि एसपी मैम! माफ करना प्लीज, मेरे चारों तरफ इतना प्रेशर बना दिया गया कि मैं तनाव नहीं झेल पाया। मैंने अंतिम सांस तक मेरा सर्वोत्तम देने का प्रयास किया। मैं बुजदिल नहीं था। बस तनाव नहीं झेल पाया। उनकी मौत की खबर के बाद समाज के युवाओं में रोष व्याप्त हो गया। विश्नोई महासभा के पदाधिकारी मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से मिले। इसके बाद जांच सीबीआई को दी गई। अब देखना यह है कि सीबीआई जांच से उनके परिवार को न्याय मिल पाता है या नहीं।

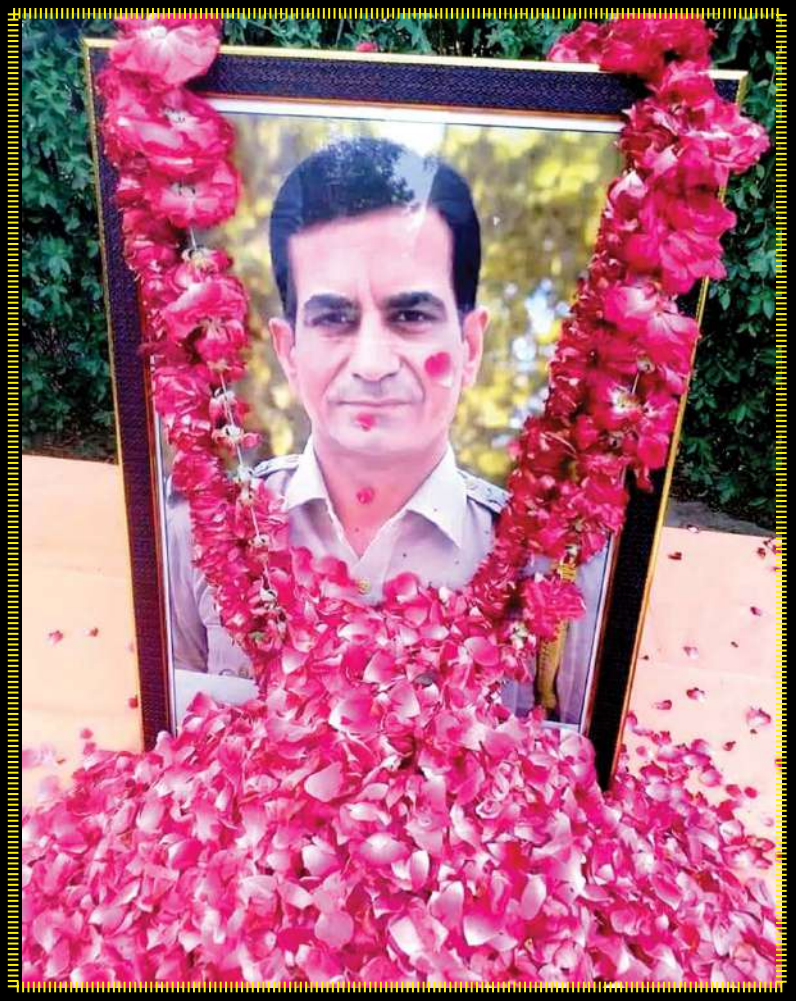

देर से भांपे

शुरुआत में विधायक-मंत्री दबाव में दिखे

विष्णुदत्त की आत्महत्या के मामले को शुरुआत में कुछ नेताओं जैसे विधायकों व मंत्रियों ने बहुत ही हल्के में लिया। दूसरी तरफ युवाओं में रोष चल रहा था। कुछ युवा सीधे विधायक व मंत्री को फोन कर इसकी जांच सीबीआई से कराने की मांग करने लगे। दो चार दिन तो जैसे तैसे नेताओं ने चलाया लेकिन जब उन्हें लगा कि अब बात हाथ से निकल रही है तब उन्होंने मुख्यमंत्री से मिलकर अपनी पीड़ा बताई। इसके बाद कुछ ने मुख्यमंत्री को लिखे निष्पक्ष जांच के लेटर वायरल करके डेमेज कंट्रोल करने का प्रयास किया। मगर, यहां युवाओं ने मुद्दा निष्पक्ष जांच की बजाय सिर्फ और सिर्फ सीबीआई का चला रखा था। ऐसे में नेताओं का यह डेमेज कंट्रोल काम नहीं आया। उनको अ पने फोन तक या तो बंद करने पड़े अन्यथा अपने निजी सचिवों को पकड़ा दिए गए। तब तक सरकार भी इस मामले की संवेदनशीलता को समझ चुकी थी और अपने विधायकों की चिंता दूर करते सीबीआई जांच कराई।

मौके पर चौका

कांग्रेस सरकार में भाजपा वालों ने बाजी मारी

विष्णुदत्त मामले की जांच सीबीआई से कराने की मांग में कांग्रेस नेता पिछड़ गए। उनकी सरकार थी और आत्महत्या के पीछे कारणों में कांग्रेसी विधायक कृष्णा पूनिया का हाथ बताया जा रहा था। ऐसे में कांग्रेस के विधायक इस मामले में चुप्पी साध गए। इस बीच युवाओं में इस बात को लेकर रोष व्याप्त हो गया कि राजनीतिक रूप से अब वह नेतृत्व नहीं रहा जो भजनलाल या रामसिंह के वक्त रहा करता था। स्थिति का फायदा भाजपा के एक युवा विधायक ने उठाया। उन्होंने आंदोलन की अगुवाई करने की घोषणा की और युवाओं ने भी उन्हें दिग्गज बता दिया।

आखिरी सांस तक मन थे गुरु महाराज...

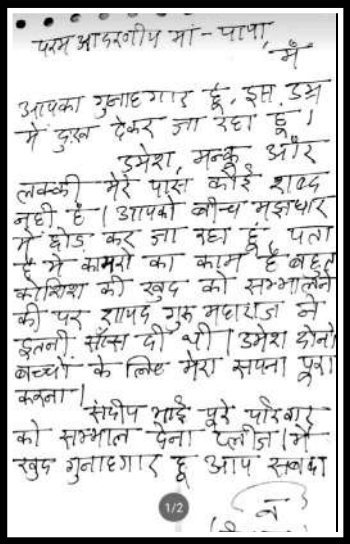

परम आदरणीय मां-पापा, मैं
आपका गुनाहगार हूं, इस उम्र
में दुख देकर जा रहा हूं।
उमेश, मन्कू और
लक्की मेरे पास कोई शब्द
नहीं है। आपको बीच मझधार
में छोड़ कर जा रहा हूं, पता
है मै कायरों का काम है बहुत
कोशिश की खुद को सम्भालने
की पर शायद गुरु महाराज ने
इतनी सांस दी थी। उमेश दोनों
बच्चों के लिए मेरा सपना पूरा
करना।
संदीप भाई पूरे परिवार
को सम्भाल देना प्लीज। मैं
खुद गुनाहगार हूं आप सबका

विष्णु दत्त मूलतः श्रीगंगानगर के रायसिंह नगर के लूणेवाला गांव के रहने वाले थे और उनकी दबंग अफसर की छवि थी। परिवार बीकानेर में रहता है। उनके एक बेटा व एक बेटी है। वे गुरु जंभेश्वर महाराज के सच्चे अनुयायी थे। वे आखिरी समय में यह लिख चले गए कि गुरु महाराज ने इतना ही समय दिया है। जांभोजी के नियमों के प्रति उनकी यही आस्था एक प्रेरणा बन चुकी है। वे हरेक के दिल में बस चुके हैं। 29 नियमों पर चलने व बचपन में मिले संस्कार ही थे कि उनकी मौत के बाद हर गांव शहर में उनके परिवार के लिए न्याय की मांग उठी। उन्होंने नवंबर 2019 में राजगढ़ में कार्य संभाला था। उनकी पोस्टिंग जयपुर, बीकानेर सहित कई थानों में रही। उनके सेवाकाल को करीब 21 साल हो गए थे। उन्होंने 3 नवंबर 1997 को पुलिस सेवा ज्वाइन की थी। वे प्रदेश के टॉप टेन हार्ड ऑनेस्ट ऑफिसर में से एक थे। डीजी के 10 सिंघम में से एक। उनकी छवि दबंग अफसर रही। उन्हें थाने से हटाने या दूसरे थाने में लगाने के विरोध में कई बार लोग आंदोलन पर उतरे थे। इन सब जिम्मेदारियों के बीच वे पूरी तरह जांभोजी के नियमावली का पालन करते थे। माता-पिता व बुजुर्गों का बहुत सम्मान करते थे। यही वजह थी कि वे रोजाना सुबह शाम अपने माता पिता से फोन पर बात करते थे। अगर सुबह ड्यूटी जाने से पहले फोन पर बात नहीं होती तो शाम को सोने से पहले एक बार बात जरूर करते थे। इस दौरान माता पिता से यह भी पूछते कि आपने हवन किया। घर परिवार में अलग अलग सदस्यों के बारे में हाल चाल पूछते। साथ खुद का शेड्यूल बताते या फिर दिन भर की जानकारी देते। उनकी इन्हीं खूबियों के कारण जब जगह जगह लोगों में आक्रोश था तो उनके चाचा ने कहा कि हमें पांच करोड़ नहीं, न्याय चाहिए। वह कोहिनूर था। उसकी कीमत नहीं लगाई जा सकती। उनके मामा एएसआई सतपाल डेलू ने बताया कि तमाम भागदौड़ के बाद भी विष्णु में रिश्तेदारी निभाने में हम सबसे दो कदम आगे रहता था।

असली नायकः अपराधियों में रहता था हर समय खौफ

इंस्पेक्टर विष्णुदत्त बिश्नोई ऐसे अधिकारी थे जिनके लिए जनता डिमांड करती थी। सब इंस्पेक्टर भर्ती हुए विष्णुदत्त बीकानेर के नापासर, कोतवाली, व्यास कॉलोनी, गंगाशहर, बज्जू, श्रीडूंगरगढ़ और कुछ समय सेरूणा पुलिस थाने में एसएचओ रहे। इस दौरान उन्होंने अपराधियों की नाक में नकेल तो डाली ही, अपनी निष्पक्ष कार्यशैली से क्षेत्र के लोगों का विश्वास जीता। सालों तक बीकानेर जिले में नौकरी करने के कारण लोग उनके काम से परिचित हो गए। बीकानेर के गंगाशहर पुलिस थाने में पोस्टिंग के दौरान उन्हें थाने से हटाना तय हुआ तो क्षेत्र के लोग धरने पर बैठ गए। उस समय आन्दोलन करने वालों में शामिल भाजपा नेता मोहन सुराणा बताते हैं कि उनके समय में गंगाशहर में आमजन को बदमाशों से

राहत थी। वे आमजन की पीड़ा सुनकर निष्पक्ष कार्यवाही करते थे। वे जिस किसी थाने में पोस्टेड रहे, वहां थाना परिसर को संवार देते थे। राजगढ़ थाने की भी उन्होंने सूरत बदल दी थी। थाने के नए भवन के उद्घाटन में उन्होंने किसी नेताओं को बुलाने की बजाय पुलिस के आला अफसरों को बुलाया था। बताया जा रहा है कि इसी वजह से विधायक कृष्ण पूनिया उनसे खफा चल रही थी।

सीबीआई जांच के संग आए नए विश्नोई रत्न

अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के संरक्षक कुलदीप विश्नोई अब विश्नोई रत्न होंगे। इंस्पेक्टर आत्महत्या मामले की सीबीआई जांच कराने में अग्रणी भूमिका निभाने पर अखिल भारतीय विश्नोई महासभा ने मुकाम में बैठक आयोजित कर इसका प्रस्ताव सर्वसहमति से पास किया। बताया जा रहा है कि सभी जिलाध्यक्षों से इसकी सहमति पहले ही ले ली गई थी। महासभा पदाधिकारियों का मानना है कि कुलदीप विश्नोई के नेतृत्व में समाज के सभी नेताओं ने विष्णुदत्त के परिवार को न्याय दिलाने के लिए अपने कदम एक साथ आगे बढ़ाए। सारे नेता समाज के प्रतिनिधि बनकर राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से मिले। और इसके सकारात्मक परिणाम भी सामने आए। मुख्यमंत्री ने दो दिन का समय इस पर विचार करने व जरूरी जानकारी के लिए मांगे। मुख्यमंत्री ने कहा था कि दो दिन में समाज को सूचित कर दिया जाएग, दो दिन में कोई घोषणा नहीं हुई तो महासभा के संरक्षक कुलदीप विश्नोई ने ट्वीट कर राजस्थान सरकार को विश्नोई समाज के गुस्से के प्रति आगाह किया। इसके अगले दो घंटे में सरकार का सीबीआई जांच की अनुसंशा का लेटर आ जाता है। यहीं से पूरा प्रकरण नया मोड़ ले लेता है और उसका केंद्र बिंदु बनता है समाज की एकता और कुलदीप विश्नोई का नेतृत्व। सोशल मीडिया पर आभार व नेतृत्व क्षमता के गुणगान की बाढ़ आ गई। इसी दौरान अखिल भारतीय विश्नोई महासभा ने एक पत्र जारी कर कुलदीप विश्नोई को विश्नोई रत्न दिए जाने की अनुशंसा कर दी। यह पत्र सोशल मीडिया पर वायरल हो गया और इस पर अलग अलग तरह की प्रतिक्रियाएं आने लगी। कुछ लोगों ने महासभा की अनुशंसा पर ही सवाल उठाने शुरू कर दिए कि सिर्फ एक प्रकरण में सीबीआई जांच की मांग करना और उसमें नेतृत्व करना विश्नोई रत्न का आधार कैसे हो सकता

श्री गुरु जम्भेश्वर नमः।।

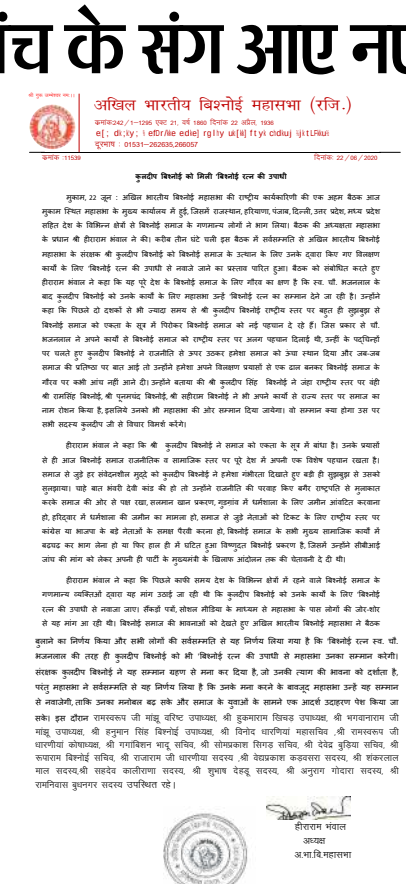

अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा (रजि.)

कमांक:242/1–1295 एक्ट 21, वर्ष 1860 दिनांक 22 अप्रैल, 1936

e|[; dk;ky; ¼ efDr/kke e|dke] rglhy uk[kk] ftyk chdkuj ¼jktLFkku½

दूरभाष : 01531–262635,266057

कमांक :11539 दिनांक: 22/06/2020

कुलदीप बिश्नोई को मिली 'बिश्नोई रत्न की उपाधी

मुकाम, 22 जून : अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की एक अहम बैठक आज मुकाम स्थित महासभा के मुख्य कार्यालय में हुई, जिसमें राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों से बिश्नोई समाज के गणमान्य लोगों ने भाग लिया। बैठक की अध्यक्षता महासभा के प्रधान श्री हीराराम भंवाल ने की। करीब तीन घंटे चली इस बैठक में सर्वसम्मति से अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के संरक्षक श्री कुलदीप बिश्नोई को बिश्नोई समाज के उत्थान के लिए उनके द्वारा किए गए विलक्षण कार्यों के लिए 'बिश्नोई रत्न की उपाधी से नवाजे जाने का प्रस्ताव पारित हुआ। बैठक को संबोधित करते हुए हीराराम भंवाल ने कहा कि यह पूरे देश के बिश्नोई समाज के लिए गौरव का क्षण है कि स्व. चौ. भजनलाल के बाद कुलदीप बिश्नोई को उनके कार्यों के लिए महासभा उन्हें 'बिश्नोई रत्न का सम्मान देने जा रही है। उन्होंने कहा कि पिछले दो दशकों से भी ज्यादा समय से श्री कुलदीप बिश्नोई राष्ट्रीय स्तर पर बहुत ही सुझबुझ से बिश्नोई समाज को एकता के सूत्र में पिरोकर बिश्नोई समाज को नई पहचान दे रहे हैं। जिस प्रकार से चौ. भजनलाल ने अपने कार्यों से बिश्नोई समाज को राष्ट्रीय स्तर पर अलग पहचान दिलाई थी, उन्हीं के पद्चिन्हों पर चलते हुए कुलदीप बिश्नोई ने राजनीति से ऊपर उठकर हमेशा समाज को ऊंचा स्थान दिया और जब-जब समाज की प्रतिष्ठा पर बात आई तो उन्होंने हमेशा अपने विलक्षण प्रयासों से एक ढाल बनकर बिश्नोई समाज के गौरव पर कभी आंच नहीं आने दी। उन्होंने बताया की श्री कुलदीप सिंह बिश्नोई ने जंहा राष्ट्रीय स्तर पर वंही श्री रामसिंह बिश्नोई, श्री पूनमचंद बिश्नोई, श्री सहीराम बिश्नोई ने भी अपने कार्यो से राज्य स्तर पर समाज का नाम रोशन किया है, इसलिये उनको भी महासभा की ओर सम्मान दिया जायेगा। वो सम्मान क्या होगा उस पर सभी सदस्य कुलदीप जी से विचार विमर्श करेंगे।

हीराराम भंवाल ने कहा कि श्री कुलदीप बिश्नोई ने समाज को एकता के सूत्र में बांधा है। उनके प्रयासों से ही आज बिश्नोई समाज राजनीतिक व सामाजिक स्तर पर पूरे देश में अपनी एक विशेष पहचान रखता है। समाज से जुड़े हर संवेदनशील मुद्दे को कुलदीप बिश्नोई ने हमेशा गंभीरता दिखाते हुए बड़ी ही सुझबुझ से उसको सुलझाया। चाहे बात भंवरी देवी कांड की हो तो उन्होंने राजनीति की परवाह किए बगैर राष्ट्रपति से मुलाकात करके समाज की ओर से पक्ष रखा, सलमान खान प्रकरण, गुडग़ांव में धर्मशाला के लिए जमीन आंवटित करवाना हो, हरिद्वार में धर्मशाला की जमीन का मामला हो, समाज से जुड़े नेताओं को टिकट के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस या भाजपा के बड़े नेताओं के समक्ष पैरवी करना हो, बिश्नोई समाज के सभी मुख्य सामाजिक कार्यों में बढ़चढ़ कर भाग लेना हो या फिर हाल ही में घटित हुआ विष्णुदत बिश्नोई प्रकरण है, जिसमें उन्होंने सीबीआई जांच की मांग को लेकर अपनी ही पार्टी के मुख्यमंत्री के खिलाफ आंदोलन तक की चेतावनी दे दी थी।

हीराराम भंवाल ने कहा कि पिछले काफी समय देश के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले बिश्नोई समाज के गणमान्य व्यक्तिओं द्वारा यह मांग उठाई जा रही थी कि कुलदीप बिश्नोई को उनके कार्यों के लिए 'बिश्नोई रत्न की उपाधी से नवाजा जाए। सैंकड़ों पत्रों, सोशल मीडिया के माध्यम से महासभा के पास लोगों की जोर-शोर से यह मांग आ रही थी। बिश्नोई समाज की भावनाओं को देखते हुए अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने बैठक बुलाने का निर्णय किया और सभी लोगों की सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया है कि 'बिश्नोई रत्न स्व. चौ. भजनलाल की तरह ही कुलदीप बिश्नोई को भी 'बिश्नोई रत्न की उपाधी से महासभा उनका सम्मान करेगी। संरक्षक कुलदीप बिश्नोई ने यह सम्मान ग्रहण से मना कर दिया है, जो उनकी त्याग की भावना को दर्शाता है, परंतु महासभा ने सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया है कि उनके मना करने के बावजूद महासभा उन्हें यह सम्मान से नवाजेगी, ताकि उनका मनोबल बढ़ सके और समाज के युवाओं के सामने एक आदर्श उदाहरण पेश किया जा सके। इस दौरान रामस्वरूप जी मांझू वरिष्ट उपाध्यक्ष, श्री हुकमाराम खिचड़ उपाध्यक्ष, श्री भगवानाराम जी मांझू उपाध्यक्ष, श्री हनुमान सिंह बिश्नोई उपाध्यक्ष, श्री विनोद धारणियां महासचिव ,श्री रामस्वरूप जी धारणीयां कोषाध्यक्ष, श्री गगांबिशन भादू सचिव, श्री सोमप्रकाश सिगड़ सचिव, श्री देवेद्र बुड़िया सचिव, श्री रूपाराम बिश्नोई सचिव, श्री राजाराम जी धारणीया सदस्य ,श्री वेद्यप्रकाश कड़वसरा सदस्य, श्री शंकरलाल माल सदस्य,श्री सहदेव कालीराणा सदस्य, श्री शुभाष देहडू सदस्य, श्री अनुराग गोदारा सदस्य, श्री रामनिवास बुधनगर सदस्य उपस्थित रहे।

हीराराम भंवाल
अध्यक्ष
अ.भा.बि.महासभा

है। उन्होंने शिक्षाविद्द व विधानसभा के अध्यक्ष-मंत्री रहे स्व. पूनमंचद विश्नोई, मंत्री व विधानसभा उपाध्यक्ष, महासभा के अध्यक्ष पद पर रहे स्व. रामनारायण विश्नोई, पूर्व मंत्री रामसिंह, पूर्व मंत्री रघुनाथ, पूर्व विधायक सहीराम धारणिया सहित अन्य दर्जनों लोगों के नाम आगे कर दिए। कहते रहे कि इनके योगदान के बारे में भी सोचा जाए, ऐसे में तो ये पहले हकदार है। कोई विश्नोई रत्न देने के नियमों के बारे में पूछने लगा तो कोई कुछ। आखिरकार इस प्रकरण को शांत करने में भी कुलदीप विश्नोई आगे आए। मगर कुछ दिन शांति के बाद महासभा की मुकाम में बैठक हुई। उसमें कुलदीप विश्नोई के नाम विश्नोई रत्न की उपाधि लगाने पर सहमति से प्रस्ताव पारित किया गया। साथ ही कहा गया कि अन्य नेताओं का भी सम्मान किया जाएगा। ऐसे में माना जा रहा है कि कई दिवंगत नेताओं को भी यह उपाधि दी जा सकती है। हालांकि पूरे मामले ने एक नई बहस छेड़ दी कि विश्नोई रत्न किसे मिलना चाहिए और क्यों? उल्लेखनीय है कि अब तक यह उपाधि हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री भजनलाल को ही मिली है। देखा जाए तो फिलहाल उनके कद के अनुरूप समाज को कोई दूसरी शख्सियत नजर नहीं आती जिसे यह उपाधि दी जाए। हालांकि कुलदीप विश्नोई को विश्नोई रत्न देने की अनुशंसा व मांग किए जाने से उन लोगों को भी मौका मिल गया, जो अपने अपने नेताओं को यह उपाधि दिलाना चाह रहे थ। कुछ ने तो नाम के साथ काम गिनाने में भी कसर नहीं छोड़ी। यहां तक कि मंत्री विधायक रहते किसी ने कहीं पानी व सड़क की व्यवस्था करवाई, उनके समर्थक इस आधार पर भी विश्नोई रत्न की उपाधि मांगने लगे। जबकि बुद्धिजीवियों का कहना था कि चौधरी भजनलाल का योगदान अतुल्य रहा है। इसलिए यह उपाधि उनके व्यक्तित्व तक सही है। भविष्य में अगर कोई शख्सियत समाज को उनसे भी नई ऊंचाइयों पर पहुंचाने व अप्रत्याशित उदाहरण प्रस्तुत करती है तो जरूर इस पर विचार विमर्श करना चाहिए। मौजूदा दौर में यह बहस बेमानी है। कई नेताओं के नाम पर विश्नोई रत्न की मांग की जा रही है। मानो कोई समाज सेवा की मुहिम चलाई गई है। हालांकि उनकी मुहिम सिरे चढ़नी मुश्किल दिखाई दे रही है लेकिन महासभा की ओर से कुलदीप को विश्नोई रत्न देने की अनुशंसा के बहाने उन्हें यह मांग उठाने का मौका मिल गया था। उनके कई समर्थक बरसों से उन्हें यह उपाधि दिए जाने की मांग करते आए हैं लेकिन कभी इस तरह सार्वजनिक दौर में नहीं पहुंची थी। बहस-बहस में इस लिस्ट में नाम इंस्पेक्टर विष्णुदत्त का भी आ गया। सही भी है, समाज ने एक ईमानदार, खुद्दार अधिकारी व बेटा खो दिया। जैसा उनके परिजनों ने कहा मुआवजे का क्या करेंगे-हमने कोहिनूर खो दिया।

लॉकडाउन में बढ़ गए शिकार

एसएनपी. जोधपुर • प्रशासन कोरोना महामारी के कारण लागू किए गए लॉकडाउन के दौरान जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जालोर सहित कई जिलों में रात तो रात दिन के उजाले में भी मूक प्राणियों का संहार हो रहा है। हिरण, खरगोश, मोर, नील गाय के शिकार की दर्जनों घटनाएं सामने आई। वन विभाग संसाधनों का रोना रो रहा है और वन्यजीवों को बचाने में लगे संगठनों के प्रयास भी काम नहीं आए। उलटे कई जगह लोगों पर ही हमले किए गए। आलम यह है कि पिछले दो महीने में शिकार प्रकरणों की बाढ़ आ गई। पर्यावरणप्रेमियों के आक्रोश को देखते हुए वन एवं पर्यावरण मंत्री सुखराम विश्नोई भी परेशान नजर आए। उन्हें मुख्यमंत्री से गुहार लगानी पड़ी कि शिकार प्रकरण रोकने में पुलिस की मदद ली जाए।

हर जिले में शिकार प्रकरणों की आ गई बाढ़

1. 13 व 17 मार्च कृष्ण मृग सैंचुरी अभ्यारण चुरू में दो अलग घटना में 22 राष्ट्रीय पक्षी मोरों को एक साथ जहरीला दाना डालकरमारा गया। इससे पहले भी इसी अभ्यारण् में वन कर्मचारियों द्वारा मांस पका कर खाने की घटना सामने आई थी। जिसकी विभागीय जांच चल रही।

2. 27 मार्च जोधपुर के केतु मदा गांव की सरहद में रात के नौ बजे जभेश्वर नगर से अपने घर लौट रहे पर्यावरण प्रेमी देवाराम पुत्र गणपतराम व देवाराम पुत्र भागीरथ विश्नोई को बन्दूक की गोली चलने की आवाज सुनाई दी। उसी दिशा में जा कर देखने पर केतु मंदा गांव के चनणसिंह, सुरजनाथ, जसनाथ हिरण का शिकार कर कैम्पर गाड़ी में डाल भागते नजर आए। गाड़ी को रुकवाने की कोशिश की तो चनणसिंह ने फायर कर गाड़ी ऊपर चढ़ा जान से मारने का प्रयास कर भाग गए। घटना के बाद मौके पर पहुंची बालेसर पुलिस व वन विभाग ने मौके पर बन्दूक की गोली का खोल व खून के धब्बे जांच के लिए भेजे। शिकारियों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच की जा रही है।

3. 28 मार्च नागौर जिले की खींवसर तहसील के ढ़िगसरा गांव दिन के उजाले में शिकारी हुकमसिंह पुत्र किशनसिंह द्वारा शिकार कर मांस पकाते हुए को पर्यावरण प्रेमियों ने वन विभाग के अधिकारियों को पकड़वाया। मौके से खरगोश व तीतर के अवशेषों के साथ मांस जब्त किया गया।

4. 30 मार्च जोधपुर जिले के आऊ कस्बे की सरहद में भीलों की ढ़ाणी में चिंकारों के शिकार के बाद मौके पर पंहुची भोजासर पुलिस व वन विभाग की टीम ने तीन शिकारी सुरजाराम पुत्र अमराराम नायक, खेमाराम पुत्र जीवणराम मेघवाल, सुनिल पुत्र पूनाराम भील को गिरफ्तार कर 10-15 किलो मांस, दो चिंकारों की खाल, कटे हुऐ पैर, टार्च, लाठी आदि बरामद किया। इन शिकारियों के खिलाफ पर्यावरण प्रेमी रमेश कुमार पुत्र भंवरूराम निवासी भींयासर फलोदी की ओर से मामला दर्ज करवाया गया।

5. 1 अप्रैल जोधपुर शहर के नजदीक रावटी वन क्षेत्र में जाल बिछा खरगोश का शिकार करते हुए अर्जुनराम बावरी निवासी नागौर को विश्नोई कमांडो फोर्स अध्यक्ष पुखराज खेड़ी ने पकड़ वन विभाग को सूचना दी। मौके पर पहुंचे वन विभाग के अधिकारियों ने शिकार में इस्तेमाल होने वाला जाल व एक घायल खरगोश जब्त किया। शिकारी को वन विभाग ने 11 हजार रुपये के मुचलके पर छोड़ दिया। घायल खरगोश को उपचार के लिए माचिया पार्क भेज दिया गया। यह घटना मंडोर वन मंडल की रावटी चौकी के करीब होने पर वन कर्मचारियों की मिलीभगत को लेकर संदेह उत्पन्न करती है।

6. 2 अप्रैल जैसलमेर के रामदेवरा के पास तीन चिंकारा का शिकार करते हुए शिकारी करनाराम भील को गिरफ्तार किया गया। वहीं उसका साथी मनिया मौके से भाग गया। बाद में पोकरण के सहायक वन संरक्षक बलराम ने गिरफ्तार शिकारी करनाराम भील की निशानदेही पर शिकार में इस्तेमाल की हुई एक बाइक व मुख्य आरोपी मनिया उर्फ मुनाराम भील, सुरेश भील, मुलाराम भील को भी गिरफ्तार किया।

7. 8 अप्रैल बीकानेर के कोलायत में एक साथ दो दर्जन मोर, तीतर, कमेड़ी, को जहरीला दाना डाल मारे जाने की दर्दनाक घटना सामने आई। अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा के प्रदेश उपाध्यक्ष हरिराम धायल के नेतृत्व में 22 मोर 13 तीतर 1 कमेड़ी 1 चिड़िया के शवों का पोस्टमार्टम करवा आरोपी रुमालनाथ, सुगननाथ को गिरफ्तार कर एक बाइक भी जब्त करवाई। पक्षियों का विसरा जांच के लिए भेजा गया। पर्यावरण प्रेमी पूरे रैकेट के खुलासे की मांग पर अड़े हैं।

8. 11 अप्रैल जोधपुर जिले के बालेसर थाने के तोलेसर चारणान में बन्दूक से फायर कर चिंकारे का शिकार करने के प्रयास में गोली चिंकारे की आंख में लगने से घायल हो गया। इस तरह से हुई शिकारी की घटना का सामना अखिल भारतीय जीव रक्षा सभा के तहसील अध्यक्ष जयराम जाणी व नारायणराम गोदारा द्वारा करने पर शिकारी ने बन्दूक दिखाते हुए कुल्हाड़ी से हमला कर पैर में चोट पंहुचाई। इसके बाद शिकारी मौके से फरार हो गए। घटना की सूचना पर कई पर्यावरण प्रेमी मौके पर पंहुच आस-पास तलाश करने पर आंख में छर्रे लगा घायल मिले हिरण को इलाज के लिए जोधपुर माचिया पार्क भेजा गया। पर्यावरण प्रेमियों ने शिकारियों द्वारा अपने ऊपर किये प्राण घातक हमला व शिकार का मामला दर्ज करवाया।

9. 17 अप्रैल धोरीमन्ना के दुदू गांव की सरहद मे लौंगी नाडी के पास शिकारियों ने चिंकारे का शिकार किया। चिंकारे के कहराने की आवाज सुन आसपास के वन्यजीव प्रेमियों ने रात में जान जोखिम में डालकर शिकारियों का पीछा किया। लेकिन अंधेरे का फायदा उठा एक शिकारी मृत चिंकारे को लेकर भागने में कामयाब रहा। वहीं एक शिकारी लीलाराम भील को वन्यजीव प्रेमियों ने दबोच लिया। पकड़े गए शिकारी के पास लाठी व झुनझुने वाली टॉर्च बरामद हुई। शिकार के घटना की सूचना मिलने पर धोरीमन्ना सीआई हरचंद देवासी मय जाब्ता के पहुंचे। लेकिन पुलिस से पहले क्षेत्रीय वन अधिकारी को सूचना देने पर भी रेंज में कर्मचारी अनुपस्थित होने के कारण दो घंटे विलंब से वन विभाग की टीम मौके पर पहुंच पाई। पकड़े गये शिकारी को गिरफ्तार कर धोरीमन्ना लाकर पूछताछ की तो उसने बताया कि उन्होंने खरगोश का शिकार कई बार किया। घटना की सूचना पर अखिल भारतीय विश्नोई जीवरक्षा सभा जिलाध्यक्ष भीखाराम सोऊ, तहसील अध्यक्ष किशोर कुमार भादू, जम्भेश्वर पर्यावरण एवं जीवरक्षा प्रदेश संस्था मीडिया प्रभारी भंवरलाल विश्नोई सहित आस-पास के क्षेत्र से बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर पहुंचे। जिलाध्यक्ष भीखाराम सोऊ ने बाड़मेर डीएफओ को फोन कर घटना व वन विभाग की कार्यशैली को लेकर अवगत कराया।

10. जैसलमेर के नोख भारमसर में वैश्विक महामारी कोरोना की रोकथाम के लिए स्कूल में बनाए वेलनेस सेन्टर में भर्ती मध्यप्रदेश के 4 श्रमिकों ने मौका पाकर तीतरों का शिकार कर मांस पकाया। शिकारियों को वहां ड्यूटी पर आए नोखा कुदसू निवासी सुशील विश्नोई ने रंगे हाथों पकड़ लिया। शिकारी व श्रमिक शिक्षक के साथ मारपीट करने लगे। मामला बढ़ा तो पर्यावरण प्रेमी मोखराम धारणियां व राधेश्याम पेमाणी भी मौके पर पंहुच नोख थाने में शिक्षक व पर्यावरण प्रेमियों ने राज कार्य में बाधा, मारपीट व शिकार का मामला दर्ज करवाया।

11. 17 अप्रैल को राजसमंद के कामलीघाट क्षेत्रीय वन अधिकारी कमलेश रावत के नेतृत्व में हीरा बस्ती के पास जाल बिछा कर शिकार करने की सूचना पर कार्रवाई करते हुए पांच शिकारियों को मृत खरगोश व जाल के साथ 3 बाइक को पकड़ 51 हजार का जुर्माना लगाकर छोड़ा। इसी क्षेत्र में शिकारी करने से रोकने पर शिकारियों द्वारा वन विभाग की टीम पर गाड़ी से जानलेवा हमला व बन्दूक से फायर करने का एक अन्य प्रकरण भी दर्ज हुआ है।

12. बीकानेर के डूंगरगढ़ गांव में हिरण का शिकार, डूंगरगढ़ तहसील के भोजास की रोही की उत्तर दिशा की ओर वहां की पास की ढ़ाणी के वन्य जीव प्रेमी हीरुराम पुत्र हुकताराम मेघवाल को बंदूक से गोली चलने की आवाज सुनाई देने पर उस तरफ देखने से एक व्यक्ति मृतक हिरण को ले जाते हुए दिखा। उनको ललकारा तो शिकारियों ने उन पर फायर कर दिया और जान से मारने की धमकी देते हुए पत्थरबाजी करते हुए भागने का प्रयास करता है। दोनों शिकारियों का पीछा कर उनके पास से बंदूक छीन मृतक हिरण बरामद करने में तो कामयाब तो हो जाता है। शिकारी पेमाराम पुत्र गोपालराम बावरी निवासी गोपालसर मौके से फरार हो जाता है। बीकानेर के जिलाध्यक्ष मोखराम धारणियां, मोतीराम बिश्नोई, कैलाश धारणियां, जीवराज, श्रवणसिंह राजपुरोहित व हुणताराम मेघवाल पुलिस व वन विभाग को लेकर घटनास्थल पर पहुंचे।

13. 19 अप्रैल को ही राजसमंद जिले की पर्वत खेड़ी गांव के पास 19 मोरों को जहरीला दाना डाल शिकार की घटना।

14. जोधपुर के बिलाड़ा उपखंड के लांबा-भावी गांव की सरहद में 23 अप्रैल गुरुवार को सुनसान कुएं के पास पेड़ से लटका कर शिकारियों ने बर्बरता पूर्वक कृष्ण मृग का शिकार किया। उसके कटे अवशेष मिलने पर पर्यावरण प्रेमी बंशीलाल व जोधाराम सारण द्वारा घटनास्थल के पास संदिग्ध घूम रहे भावी निवासी महेन्द्रसिंह को पकड़ा। फिर पुलिस व वन विभाग को सूचना दी।

15. 26 अप्रैल नागौर जिले के गुड़ा भगवानदास में रात के समय हिरण का शिकार एक शिकारी को दो मृत हिरणों सहित पकड़ा। उसके पास से एक बाइक व हथियार भी जब्त किया गया। इसी दिन दूसरी घटना जोधपुर के बिसलपुर में आर्मी पौशाक पहने एक शिकारी को शिकार की टोह में हथियार सहित घूमते पकड़ा। तीसरी घटना सेतरावा गांव के पास सोमेसर के पास तीतरों का शिकार करते गिलोल सहित शिकारी को पकड़ा। चौथी घटना पाली जिले की सोजत तहसील के नापावास गांव सरहद में कृष्ण मृग का शिकार शिकारी को कुंट सहित पकड़ा। दो शिकारी भागने में सफल हुए। (इसी दिन नागौर के गोलसर, गच्छीपुरा, इम्यार व जोधपुर के बीराणी गांव में शिकारी की घटनाएं हुई।

16. 27 अप्रैल को जोधपुर से 55 किलोमीटर दूर बावड़ी पंचायत समिति के बासनी डांवरा की गुर्जरों की ढाणी की पश्चिमी दिशा स्थित हिंगोनिया नाडा की गोचर भूमि पर स्वच्छंद विचरण करते मादा चिंकारा को बोलेरो कैंपर गाड़ी में सवार चार शिकारियों ने टोपीदार बंदूक से फायर कर शिकार कर लिया गया। फायर की आवाज नजदीक ढाणियों में रह रहे छोटाराम पुत्र भागीरथ गुर्जर कोजाराम, प्रेमाराम, देवाराम, मंगलाराम गुर्जर व हरिराम बेनीवाल उसी दिशा में गए तो अपनी बोलेरो गाड़ी के साथ बंदूक लिए सुरेन्द्रसिंह पुत्र श्याम सिंह राजपूत निवासी डांवरा एवं उसके साथ बीराराम उर्फ पीराराम भील ने पर्यावरण प्रेमियों पर फायर कर लाठी से हमला कर दिया। रात्री में हुए संघर्ष के दौरान आरोपी सुरेन्द्रसिंह व उसकी गाड़ी के साथ एक मृत चिंकारा, एक टोपीदार बंदूक, कुल्हाड़ी आदि बरामद कर वन विभाग में मुकदमा दर्ज करा मादा चिंकारा का पोस्टमार्टम करवाया। घटना की गंभीरता पर अगली सुबह सैकड़ों ग्रामीण बिश्नोई टाइगर फोर्स के पदाधिकारी उप वन संरक्षक महेशकुमार चौधरी खेड़ापा कार्यवाहक थानाधिकारी जालाराम व बिश्नोई टाइगर्स वन्य एवं पर्यावरण संस्था बिश्नोई टाइगर फोर्स प्रदेशाध्यक्ष रामपाल भवाद, क्षेत्रीय वन अधिकारी अशोक पंवार, बिश्नोई महासभा ग्राम प्रधान सोहनराम राड़, पंचायत समिति सदस्य मोहनराम बिश्नोई, हरदेव बिश्नोई, बुधाराम,जगमालराम, हरिराम बेनीवाल, लादूराम, दिनेश बोला, बीरबल लोल,महीराम इत्यादि लोग मौके पर पहुंचे। लॉकडाउन के चलते वन विभाग द्वारा वन्यजीव शिकार पर अंकुश नहीं लगाने पर रोष प्रकट कर विरोध प्रदर्शन किया। इसी बीच इसी दिन जैसलमेर के रामगढ़ नहरी क्षेत्र में दो चिंकारा का शिकार करते हुऐ चार शिकारियों को पकड़ा।

17. 3 मई को कोलायत तहसील के खारिया बतां तान की रोही में बने शिकारीयों के डेरों से 37 किलो मांस पकड़ा।

18. 5 मई को पीपाड़ शहर उपखंड के बुचकला, बांकलिया सरहद में हिरण शिकार।

19. 8 मई को कोलायत के गजनेर थाना क्षेत्र के सुरजना गांव की रोही ऊंट की सवारी कर हिरणों का कत्लेआम हुआ, पदचिह्न व खून के धब्बे मिले। इसी दिन दूसरी घटना बाड़मेर के सिवाना के मुठली गांव में आदतन शिकारियों ने मोरों का जहरीला दाना डाल शिकार किया।

20. 11 मई बालेसर के केतु मदा सरहद के भालु अनोपगढ़ में हिरण का शिकार कर भाग रहे शिकारियों का पीछा कर 303 लाइसेंस सुदा बंदुक किशोर पर्यावरण प्रेमी मुकेश मांजु द्वारा जान की बाजी लगाकर छीनने की घटना पर्यावरण प्रेमियों के लिए सम्मान की घटना है। इस तरह से मूक प्राणियों पर जान की बाजी लगा खतरा से खेलते पर्यावरण प्रेमी सरकार की ओर से शिकारियों पर कड़ी कार्रवाई नहीं होने से रोष मंक है।

"लॉकडाउन में हुई घटनाएं पर्यावरण संरक्षण को खुली चुनौती है। इसलिए सरकार कठोर कदम उठाए। अन्यथा पर्यावरण संरक्षण के लिए संगठन लॉकडाउन समाप्ति के बाद बड़े आन्दोलन का बिगुल फूंकेगा। – **रामपाल भवाद,** अध्यक्ष (विश्नोई टाइगर फोर्स।)

"शिकार की घटनाएं बेहद चिंताजनक है। संगठन की ओर से पर्यावरण संरक्षण के लिए हर संभव प्रयास किये जा रहे हैं। लॉकडाउन के दौरान हुई शिकार की घटनाएं की जांच के लिए सरकार से बात की जाएगी। – **बलदेवराम सोऊ** (प्रदेश अध्यक्ष अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा)

"लॉकडाउन के कारण हुई शिकार की घटनाएं चिंताजनक है। लॉकडाउन के दौरान भी शिकार की रोकथाम के लिए संगठन के कार्यकर्ता हर मोर्चे पर खड़े रहे। आगे भी पर्यावरण संरक्षण के लिए सरकार को अवगत करवाकर कड़ी कार्रवाई करवाएंगे। **ओमप्रकाश लोल,** संगठन मंत्री (विश्नोई टाईगर फोर्स)

जो घटनाएं हुई वह बेहद चिंताजनक है। संगठन ने पर्यावरण संरक्षण के लिए काफी प्रयास किए हैं व आगे भी पर्यावरण संरक्षण के संगठनों के साथ बात को आगे लेकर जाएंगे। – **पुखराज खेड़ी अध्यक्ष** (विश्नोई कंमाडो फोर्स)

"कोलायत में हुई घटना विचलित करने वाली थी। लॉकडाउन का फायदा उठा शिकारी बैखोफ हो कर शिकार करते रहे। सरकार को चाहिए की शिकार रोकने के लिए कड़े प्रवधान बनाए। – **हरिराम धायल** (प्रदेश उपाध्यक्ष अखिल भारतीय जीव रक्षा विश्नोई सभा कोलायत।)

ग्रेट लीडर्सः स्व. रामसिंह के किस्से

क्रबिस्तान में जगह कम है तो आडा की जगह ऊबा दफनाना शुरू करो

अखिल भारतीय विश्नोई महासभा के पूर्व अध्यक्ष व राजस्थान में कांग्रेस के कद्दावर नेता रामसिंहजी विश्नोई की कार्यशैली को आज भी लोग याद करते हैं।

यह वाकया उस जमाने का है जब मारवाड़ में साब के नाम से विख्यात स्व. रामसिंह विश्नोई अपने विधानसभा क्षेत्र लूणी के लोगों की जनसुनवाई मंच या कुर्सियों पर बैठने की बजाय ग्रामीणों के साथ जमीन पर बैठकर किया करते थे। उनका पैतृक गांव तिलवासनी तो बिलाड़ा विधानसभा क्षेत्र में आता है, लेकिन लूणी विधानसभा क्षेत्र उनका राजनीतिक घर रहा है। एक दिन वे एक गांव पहुंचे थे। यहां ग्रामीणों के साथ बैठे थे। लोग अपनी अपनी शिकायतें दे रहे थे। रामसिंह अफसरों व कर्मचारियों को उनकी समस्याएं सुलझाने के लिए हाथोहाथ ही निर्देश दे रहे थे। इस गांव की आबादी पांच छह हजार के करीब थी। आज भी वहां 36 ही कौम के लोग रहते हैं। जनसुनवाई के दौरान ही एक समुदाय ने कब्रिस्तान के लिए जमीन कम पड़ने की बात कहते हुए गांव के बाहर अलग से कब्रिस्तान के लिए जगह आवंटित करवाने की मांग की। यह सुनकर उन्होंने अपनी चिरपरिचित शैली में मजाक करते हुए कहा कि जिगिया कम पड़े है तो अम ऊबा दफनाओ...यह सुनकर समस्या लेकर आए सहित सभी सब लोग हंस पड़े। मजाक यहां तक नहीं थमी, फिर बोले-नई जगह तो आवंटित करवा दूंगा लेकिन थे इता किता हो... मरणिया बढ़ई पण जमीं थोड़ी बढ़ई... यह कहते हुए वहां बैठे संरपच, ग्रामसेवक व पटवारी को नए कब्रिस्तान के लिए जगह आवंटित करने के निर्देश दिए। मौके पर ही इसका प्रोसेस शुरू करवा दिया। जब जमीन आवंटन की प्रक्रिया आगे बढ़ी तो उन्होंने फिर उसी लहजे में कहा नई जगह भी कम पड़ ज्ये तो बता दइयो। अब यह गांव 2011 के परिसीमन के बाद बिलाड़ा विधानसभा क्षेत्र में शामिल हो गया है लेकिन लोग आज भी साब को याद करते हुए यह मजाक दोहराते हैं कि साब तो साब हा।

29 नियम

तीस दिन सूतक पांच ऋतुवंती न्यारो।

सेरा करो स्नान, शील संतोष शुचि प्यारो।

द्विकाल संध्या करो, सांझ आरती गुण गावो।

होम हित चित सूं होय, बास बैकुण्ठा पावो।

पाणी बाणी ईंधणी दूध इतना लीजे छाण।

क्षमा दया हिरदे धरो गुरु बतायो जाण।

चोरी निंदा झूठ बरजियो वाद न करणो कोय।

अमावस्या व्रत राखणो भजन विष्णु बतायो जोय।

जीव दया पालणी रूंख लीलो नहीं घावे।

अजर जरे जीवत मरे वे वास स्वर्ग ही पावे।

करे रसोई हाथ सूं, आन सूं पल्ला न लावे।

अमर रखावे ठाट बैल बधिया न करावे।

अमल तमाखू भांग मद्य मांस सूं दूर ही भागे।

लील न लावे अंग देखत दूर ही त्यागे।

अनूठा पाहल

रामड़ावास में एकता का संदेश

बरसों से परंपरा को अपनाते हैं 5 सौ घर व 16 गौत्र के लोग

जोधपुर जिले के रामड़ावास गांव में सदियों पहले संत साहबराम की बनाई परंपरा को मानते हुए यहां के बाशिंदे आज भी होली का पाहल एक जगह से लेते हैं। साहबराम एक बहुत बड़े जांभाणी साहित्यकार थे। समाज के धर्म प्रचारक वील्होजी महाराज की संत परम्परा में वे वीहलेश्वर मन्दिर रामड़ावास के महन्त भी रहे। संत साहबराम ने साहित्य का बहुत बड़ा काम किया। जंभसार ग्रंथ को लिखा। इसके दो भाग है। उन्हीं के लिखे साहित्य में बताया गया है कि भगवान जांबोजी अपने भ्रमण काल में चितौड़ की महारानी झाली राणी जो चितौड़ के तत्कालीन राणा सांगा की मां थी। उनको उपदेश देने के बाद वापस लौटते समय मेवाड़ के पांच गांव भीलवाड़ा, पुर, सम्बेलिया, मांडल और दरीबा गांव के लोगों को पवित्र पाहल दे कर विश्नोई पंथ में शामिल करने के बाद पुष्कर व अजमेर गए। फिर आगे चलकर नागौर के पोलास, पोलास से कोसाणा व कोसाणा से रामड़ावास आए। संत साहबराम के लिखे ग्रंथ में बताया गया है कि *विष्णु अवतारी भगवान* जांबोजी रामड़ावास में करीब तीन महीना और दस दिन रहे थे। उस प्रवास के दौरान रामड़ावास सहित आस पास के दर्जनों गांवों से लोग आए और गुरुजी के दर्शन कर के कृतार्थ हुए। उसी ग्रंथ में संत साहबराम ने आगे लिखा है कि गुरु जांबोजी ने रामड़ावास में 64 गांवों को शामिल किया था। जिसे आज के जमाने में चौरासी के नाम से जानते हैं। उसी दरम्यान रामड़ावास गांव में एक शाम को भगवान का जागरण हुआ व सवेरे पवित्र पाहल बनाकर सभी को 29 नियमों के प्रति संकल्पित किया। तत्पश्चात भगवान जांबोजी ने सभी 64 गांवों के साक्षी

में रामड़ावास को बडेर की थरपना की और कहा कि बिश्नोई समाज की पंच पंचायती में रामड़ावास को बडेर की उपाधी से नवाजा जाए। इसीलिए रामड़ावास को आज भी विश्नोई समाज का बडेर कहते हैं। यहां होली के पाहल की परंपरा यह है कि जब से रामड़ावास गांव बसा तब से आज तक सोऊ गोत्र परिवार के सदस्य द्वारा पाहल किया जाता है। रामड़ावास में सबसे पहले भोपालगढ़ के पास रड़ोद गांव से आकर रामड़ावास में सोऊ गोत्र के विश्नोई व बोचावत गोत्र के मेगवाल एक साथ आकर बसे थे। रामड़ावास में आकर जब सोऊ परिवार बसा उस समय दो भाइयों का परिवार था। होली के पाहल की परम्परा में बड़े भाई के बेटे ने पाहल किया व छोटे भाई यानी काका ने गुड़ बांटा। यह परंपरा आज भी यहां कायम है। इस बार होली का पाहल रामूराम पुत्र चिमनाराम सोऊ व गुड़ हपाराम पुत्र लूबाराम सोऊ ऊंचली बास ने बांटा।

रेगिस्तान में केसर की महक

रिटायर्ड टीचर का नवाचारः उगा डाली 'बर्फीली केसर'

SNP बिलाड़ा. राजस्थान में भीषण गर्मी के प्रकोप से सभी वाकिफ है। गर्मी की शुरुआत में ही चिलचिलाती धूप कंठ सुखा देती है। ऐसे में प्रदेश के किसानों को भी गर्मी और मौसम परिवर्तन के दौरान फसलों की बुवाई में भी काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में यहां के किसान अमूमन ऐसी फसलों पर ज्यादा फोकस करते है जिनमें पानी कम लगे और पैदावार अच्छी हो। वहीं जोधपुर जिले के पीपाड़ उपखंड के चिरढ़ाणी में रहने वाले विश्नोई परिवार ने 'थार' में 'बर्फीली केसर' उगा सभी को अचरज में डाल दिया है। पीपाड़ शहर उपखंड से 15 किलोमीटर दूर चिरढ़ाणी निवासी पूर्व शिक्षक सोनाराम बिश्नोई अब किसान की भूमिका में है। उन्होंने लीक से हटकर अपने खेत में एक क्यारी बना मात्र 60 पौधों के केसर की फसल उगा दी।

इस तरीके से की केसर की खेती

किसान सोनाराम का कहना है कि एक परिचित से उन्होंने कश्मीर से इसके बीज मंगाए और अपने खेत में एक क्यारी बना जमीन में इसकी खेती की। चूंकि केसर का पौधा ठंडे प्रदेश में उगता है। इसलिए बारिश खत्म होने के बाद सितंबर माह के अंत में इसके 60 बीज बोए गए। उस समय वातावरण में नमी रहती है। साथ ही कुछ समय बाद सर्दी दस्तक दे देती है इसलिए यह समय सबसे उपयुक्त रहा।

छोटी क्यारी बन गई केसर की बगिया

किसान सोनाराम का कहना है कि बुवाई के वक्त गिनती के 60 बीज बोए जिनमें से 56 पौधे विकसित होने पर (जब इसमें फूल निकलते हैं) तब चार से पांच दिन में अच्छी तरह से सिंचाई करनी पड़ती है। ऐसे में पानी की कमी की वजह से थोड़ी दिक्कत का सामना उन्हें भी करना पड़ा। बुवाई के छह महीने बाद मार्च के अंत में जब केसर का फूल पूरी तरह से पककर लाल हो गया तो केसर की पंखुड़िया तोड़ ली गई। इसके बाद इसे छाया में सुखाकर तैयार कर लिया।

कम जगह पर ज्यादा पैदावार

20×10 फीट क्यारी में की केसर की खेती से सोनाराम बिश्नोई को लगभग आधा किलो शुद्ध केसर प्राप्त हुई है। केसर के बीज व पंखुड़ियां का बाजार मूल्य एक लाख तक है।

पानी के टैंकर से पनपाई खेती

थार के रेगिस्तान में पनपाई बर्फीली केसर के पौधों की सिचाई किसी बोरवेल या कुए से नहीं की। जरूरत के हिसाब से पानी का टैंकर पौधों के पास बनी टंकी में डलवा बूंद बूंद सिंचाई कर पौधे पनपाए। किसान सोनाराम का यह भी मानना है कि थार किसान चाहे तो इसकी बड़ी मात्रा में खेती कर बड़ा मुनाफा कमा सकता है।

थार के वातावरण के कारण है थोड़ी अलग केसर

किसान ने बताया कि वातावरण बदलने के कारण यह केसर कश्मीरी केसर से थोड़ी अलग है। कश्मीर में केसर का पौधा थोड़ा छोटा होता है। वहीं, यहां जो केसर के पौधे हुए उनकी लंबाई चार से पांच फीट रही। साथ ही इसके रंग पर भी आंशिक असर पड़ा। लेकिन पूरी सर्तकता और देखभाल के साथ इसे उगाया गया। जिससे इसकी गुणवत्ता और स्वाद पर कोई फर्क नहीं पड़ा। केसर के पौधों को मकड़ी जाल से बचाने के लिए 10 से 15 दिनों की पुरानी छाछ का स्प्रे बार बार करना पड़ा। तेज धूप में छाया जरूरी करनी पड़ती है।

हमारे नियम

5 दिन ऋतु धर्म

परिवार के स्वास्थ्य और स्वच्छता के लिए महत्वपूर्ण

उदयराज खिलेरी, सांचौर

पंच दिनावधिं कृत्वा रजः स्वलाऽवला सर्व गृहकार्येभ्यः पृथक् भवितुमर्हा।

अर्थातः 5 दिन तक रजस्वला स्त्री को सब गृह कार्यों से अलग रहना चाहिए।

गुरु जंभेश्वर प्रदत्त 29 नियमों में पांच दिन ऋतु धर्म नियम स्वास्थ्य और स्वच्छता से जुड़ा है। इसके सफल निर्वहन में पूरे परिवार की बराबर भूमिका रहती है। पांच दिन के मासिक धर्म में आ जाने पर महिला को गृह कार्यों से दूर आराम करने देना चाहिए। यह तभी संभव है जब घर की दूसरी औरतें ध्यान दें। चरक संहिता व सुश्रुत संहिता जैसे आरोग्य ग्रंथों के अनुसार उन दिनों क्योंकि महिला शरीर नवसृजन के लिए तैयार रहती है,अतः वह अत्यन्त नाजुक एवं संवेदनशील स्थिति होती है। उस दौरान शरीर रोगों के प्रति संक्रमण के लिए उदासीन हो जाता है। शरीर को अधिक विश्राम की आवश्यकता होती है। रक्त संक्रमण की आशंका में अन्न जल भोजन आदि को छूना नहीं चाहिए। उसके कपड़े, बर्तन, बिस्तर आदि पृथक रखने चाहिए। यह सिर्फ इसलिए कि इस अवस्था में उसका शरीर अति संवेदनशील हो जाता है। ऋतुधर्म का वास्तविक नाम है रजोदर्शन। इसके आरम्भ होते ही लड़कियों में शारीरिक व मानसिक परिवर्तन आरम्भ हो जाते हैं। हमारे देश में गर्म वातावरण के कारण 12-13 वर्ष की आयु में मासिक धर्म आना शुरू हो जाता है। जबकि ठंडे प्रदेशों में 18 से 20 वर्ष की आयु में। 45-50 वर्ष की आयु में यह बंद हो जाता है। यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है अतः इससे घबराना नहीं चाहिए। ऋतुधर्म की प्रक्रिया औसतन निवृति के 27 वें दिन दुबारा शुरू होकर 5 वें दिन पूर्ण हो जाती है। अतः इसे मासिक धर्म या महावारी (Mensuration Period) भी कहते हैं। मासिक धर्म आरम्भ हो जाने पर कन्या को स्त्री पद प्राप्त हो जाता है। विवाहिता की भांति कुमारी कन्या को भी घर के कार्यों से पृथक रखना चाहिए। घर में माता, बड़ी बहिन और भाभी को अपना दायित्व समझकर कन्या का मार्गदर्शन करना चाहिए। उसके मन की झिझक दूर करनी चाहिए। संक्रमण से बचने के लिए रजस्वला के प्रतिदिन साफ धुले वस्त्र पहनने चाहिए। मैले कपड़ों से संक्रमण की आशंका प्रबल हो जाती है। उसे

चौका-चुल्हा,पानी-पनघट,दूध दूहना,दही मंथन तथा देव दर्शन,पूजा-यज्ञ और सांसारिक कर्म निषेध बताए गए हैं। इस दौरान ऋतुमति को पाहल भी ग्रहण नहीं करना चाहिए। महावारी वह प्रक्रिया है जिसमें स्त्री का शरीर गर्भ धारण की तैयारी करता है। यदि गर्भधारण नहीं होता है तो स्त्री को पुनः माहवारी आ जाती है। यह प्रक्रिया 21 से 35 दिन के बीच होती है। यह चक्र हर स्त्री में कमोबेस अलग-अलग हो सकता है। औसतन यह चक्र 28 दिन में पूरा होता है अतः इसे मासिक चक्र कहते हैं। जब माहवारी शुरू होती है तो वह अक्सर एक-दो वर्ष तक नियमित नहीं हो पाती है। मनु स्मृति में कहा गया है कि रजोनिवृति के पश्चात विवाहित महिला पवित्र एवं निर्दोष हो जाती है। प्रथम रजोदर्शन कभी-कभी आकस्मिक रूप से बिना किसी कष्ट के हो जाता है,कभी-कभी किसी को पूर्व में सिर दर्द के दौर शुरू हो जाते हैं। स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। कई स्त्रियों को मासिक स्राव बिना किसी कष्ट के हो जाता है और कइयों को कुछ घंटों अथवा दो-चार दिन से लेकर समाप्त होने तक कष्ट देता है। स्वभाव का चिड़चिड़ापन रहता है। यह स्वभाविक प्रक्रिया है कई बीमारी के लक्षण नहीं है। अतः घबराना नहीं चाहिए, तथापि योग्य चिकित्सक से परामर्श अवश्य लेना चाहिए।

आर्ष ग्रंथों में मासिक धर्म

*रजसाभिप्लुतां नारीं नरस्य ह्युपगच्छतः।
प्रज्ञा तेजो बलं चक्षुरायुश्चैव प्रहीयते।।
(भृगु संहिता)
-जो पुरुष रजस्वला स्त्री से गमन करता है, उसकी बुद्धि, तेज,बल, पराक्रम,नेत्र,आयु आदि सब नष्ट हो जाते हैं।

*दर्भसंस्तरशयनीं करतशरावपर्णान्यसमभोजनीं।
हविष्यंत्र्यहं भनर्तुः संरक्षेत्।
तनः शुद्धस्तानां चतुर्थे हन्यहत।
वा समलंकृता कृत मंगलस्वस्ति वाचानां भर्तारं दशर्येत्।।
-रजस्वला स्त्री को उचित है कि रजोदर्शन के पश्चात चार दिन तक कुश के आसन पर शयन करें,हाथ में पत्तल लेकर घृत,मिष्ठान व चावल की खीर का भोजन करें। चार दिन पश्चात स्नान कर स्वच्छ वस्त्र एवं आभूषणों से अलंकृत होकर मंगलमय वचन बोलते हुए पति के दर्शन करने चाहिए।

जाम्भाणी साहित्य में ऋतुधर्म

*तीस दिन सूतक,पांच ऋतुवंती न्यारो।
(उदोजी नैण)
*मास एक सूतक कहूं,रजस्वला दिन पांच।
जो इनको माने नहीं लगै धर्म की आंच।।
(नाथाजी को उपदेश)
*मास एक सूतक तुम मानों।
पंच दिवस तक ऋतुमती जानों।। (जम्भ सागर)
*जुदा पांच दिन लौ ऋतु बीच नारी।
रहै फिर शुचि हो सुवस्त्रादि धारी।। (जम्भ संहिता)
*ऋतुवन्ती ह्वै नार पलो नहीं छुइयै।
पांचु कपड़ा धोय,नहाय सुधि होइयै।।

जुड़िए समराथल न्यूज पोस्ट के साथ

अपने क्षेत्र की सामाजिक, शैक्षणिक, पर्यावरणीय, राजनीतिक व धार्मिक गतिविधियों के समाचार व आलेख समराथल न्यूज पोस्ट तक पहुंचाएं। जरिए वॉट्सएप नंबरः 9166630130| और ईमेलः samrathal.newspost@gmail.com

अपनी खुशी सबके साथ बांटिए। इसमें समराथल न्यूज पोस्ट पत्रिका सहयोगी बनेंगी। किसी बेटे-बेटी ने शिक्षा, खेल, चिकित्सा या विज्ञान के क्षेत्र में नाम रोशन किया हो या किसी ने सफलता की सीढ़ियां चढ़ी हो। यह पूरे समाज के लिए गर्व की बात है। इस गर्व की अनुभूति पूरे समाज को भी हो। फिर देर किस बात की। समराथल न्यूज पोस्ट के जरिए इस खुशी को दोगुना कीजिए। अपने फोटो व प्रमाण पत्र के साथ भेजिए...samrathal.newspost@gmail.com पर।

प्लान पर पानी फिरा : खेजड़ली में बिना प्रस्ताव लिए प्याऊ निर्माण करने का मामला

SNP. खेजड़ली. शहीद स्मारक परिसर में कुछ दिन पहले गांव के ही एक भामाशाह की ओर से प्याऊ निर्माण को लेकर विवाद हो गया। इसके बाद दो पक्ष आमने सामने हो गए। आखिर इसकी गाज शहीद स्थली के व्यवस्थापक पर पड़ गई। उन्हें इस्तीफा देना पड़ा। पूरे विवाद का कारण शहीद स्थली के पश्चिम गेट व सड़क को तोड़ करवाई जा रही प्याऊ का रहा। हाल ही में बनी जोधपुर-सरदारसमंद डबल सड़क की तरफ स्थित शहीद स्थली का यह प्रवेश द्वार बड़ा होने के कारण लोहे के गेट लगा बंद रखा जाता है। इस प्रवेश द्वार को मुख्यता मेले के दिन ही खोला जाता है। गेट के सामने से निकलने वाली सड़क से लेकर शहीद स्मारक तक डिवाइडर लगाकर दोनों ओर आने जाने के लिए चौड़ी डामरीकरण सड़कें बनवाई हुई है। यहीं पर बिना सहमति के भामाशाह व व्यवस्थापक ने मिल कर मुख्य गेट व सड़क को तोड़कर पक्की प्याऊ का निर्माण कार्य शुरु करवाया दिया। शहीद स्थली के गेट के अन्दर की ओर सड़क के बीचों बीच अनावश्यक प्याऊ व टांका निर्माण के लिए जेसीबी की सहायता से गहरा खड्डा खोद डाला।

जिसकी भनक स्थानीय लोगों को लगने पर लोग आ पहुंचे। उन्होंने काम रुकवा दिया। कहा कि प्याऊ के स्थान का चयन गलत व बिना प्रस्ताव से किया गया है। यहां प्याऊ बनी तो शहीद स्थली पर भरे जाने वाले मेले के दिन आने जाने वालों के लिए बाधा उत्पन्न होगी। गेट का सौन्दर्यीकरण बिगड़ जाएगा। दूसरी तरफ भामाशाह के पक्ष में भी कई लोग आ गए। विवाद का समाधान नहीं निकाले जाने पर खोदा गया गड्ढा पाटकर अब नई जगह की तलाश शुरू की गई है। पूरे प्रकरण में व्यवस्थापक उग्र हो गए और अपना इस्तीफा मंदिर के महंत को सौंप दिया।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की गाइडलाइन में देखिए

ICMR नई दिल्ली ने कुछ सुझाव दिए है इन्हें कृपया ध्यान से पढ़ें।

कोरोना को लेकर बहुत कुछ महत्वपूर्ण बिंदु ..

1) 2 साल के लिए विदेश यात्रा स्थगित करें.
2) 1 साल तक बाहर का खाना न खाएं.
3) अनावश्यक शादी या अन्य समान समारोह में न जाएं.
4) अनावश्यक यात्राएं न करें.
5) कम से कम 1 साल के लिए भीड़ वाली जगह पर न जाएं.
6) पूरी तरह से सामाजिक दूरी रखने के मानदंडों का पालन करें.
7) ऐसे व्यक्ति से दूर रहें जिसे खांसी है.
8) फेस मास्क हमेशा रखें.
9) वर्तमान एक सप्ताह में बहुत सावधान रहें.
10) अपने आसपास किसी भी तरह की गड़बड़ न होने दें.
11) शाकाहारी भोजन को प्राथमिकता दें.
12) अब 6 महीने के लिए सिनेमा, मॉल, भीड़ भरे बाजार में न जाएं। यदि संभव हो तो पार्क, पार्टी आदि से भी बचना चाहिए.
13) अपनी इम्युनिटी बढ़ाएँ.14) नाई की दुकान पर या ब्यूटी सैलून पार्लर में न जाएं.
15) अनावश्यक मीटिंग से बचें, हमेशा सोशल डिस्टेंसिंग को ध्यान में रखें.
16) कोरोना का खतरा जल्द खत्म होने वाला नहीं है।
17) जब आप बाहर जाते हैं तो बेल्ट, अंगूठी, कलाई घड़ी न पहनें। घड़ी की आवश्यकता नहीं है। आपका मोबाइल समय बताता है।
18) अवश्य वस्तु को हाथ नहीं लगाएँ, आवश्यक हो तो सैनिटाइटर का उपयोग करें.
19) अपने घर में जूते नहीं लगाएँ । उन्हें बाहर कोने में छोड़ दें.
20) बाहर से घर आने पर अपने हाथ और पैर साफ करें.
21) जब आपको लगे कि आप एक संदिग्ध रोगी के निकट आ गए हैं तो पूरी तरह से स्नान करें.

अगले 6 महीने से 12 महीने तक इन सावधानियों का पालन नहीं करते है तो दुबारा लॉक डाउन की जरूरत नहीं रहेगी।

इसे अपने सभी परिवार और दोस्तों के साथ साझा करें।

धन्यवाद...

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

https://www.icmr.gov.in/

गूगल मैप से खतरे में पड़ी शादी

चेन्नई. तमिलनाडु के आर. चंद्रशेखरन नामक शख्स ने आरोप लगाया है कि गूगल मैप्स ने उसके वैवाहिक जीवन में जहर घोल दिया है। यह उसे उन स्थानों पर दिखाता है, जहां वह कभी गया ही नहीं। परेशानी तब बढ़ जाती है जब उसकी पत्नी इसका "योर टाइमलाइन' फीचर देखती है और सवाल पूछ-पूछकर परेशान कर देती है। इस चक्कर में वह उसे सोने भी नहीं देती है। नागपट्टिनम जिले के मइलादुथुराई में 49 वर्षीय चंद्रशेखरन ने इस संबंध में पुलिस में शिकायत भी की है। इसमें उसने लिखा है कि उसकी पत्नी गूगल मैप्स पर अधिक भरोसा करती है। पिछले कुछ महीनों से उसकी पत्नी लगातार गूगल मैप्स का "योर टाइमलाइन' फीचर देखती है और उसे सोने नहीं देती है। वह लगातार सवाल करती रहती है कि "कहां थे।' वह इस बारे में ही सोचती रहती है और इससे उसका पारिवारिक जीवन प्रभावित हो रहा है। चंद्रशेखरन के मुताबिक, "वह पत्नी के सवालों के जवाब नहीं दे पाता और वह परिवार, संबंधियों, मेरे दोस्तों और काउंसलर के समझाने के बावजूद किसी की नहीं सुन रही है। कई बार बात करने के बावजूद वह मानने को तैयार नहीं है कि मैं सच बोल रहा हूं। वह गूगल मैप्स पर सबसे ज्यादा भरोसा करती है। इस कारण उसकी शादी संकट में आ गई है।' चंद्रशेखरन के मुताबिक, गूगल के खिलाफ कार्रवाई करें और मुझे इंसाफ दिलाएं। उसने गूगल से इस प्रताड़ना के लिए हर्जाना भी मांगा है। थाने के जांच अधिकारी के सिंगरावेलु के मुताबिक, अभी इस मामले में कोई एफआईआर दर्ज नहीं की गई है। हम पति-पत्नी को बुलाकर काउंसिलिंग करने पर विचार कर रहे हैं। यदि यह कारगर नहीं रही तो सोचेंगे कि क्या करना है।

सोशल मीडिया पर स्टार बनने के लिए चुना शहीद स्थल, विवाद के बाद माफी मांगी

पिछले दिनों गुड़ा विश्नोइयान गांव की दो युवतियों का एक वीडियो वायरल हुआ जिसमें वे खेजड़ली में मंदिर के आगे फूहड़ नृत्य करती दिखाई देती है। इसके वायरल होते ही साधु संतों व गणमान्य लोगों ने विरोध शुरू कर दिया। एक के बाद एक कई वीडियो मंदिर परिसर में शूट करने की बात आई तो गुस्सा और भड़क गया। तब जाकर युवतियों ने वीडियो जारी कर इसके लिए माफी मांगी। वीडियो में वह जूते पहने हुए हैं और नीला वस्त्र भी धारण किया हुआ है। माफी मांगने के बाद भी कुछ लोगों ने उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग की है।

सबदवाणी

रामस्वरूप जंवर जैसला
शोधार्थी
जेएनवीयू, जोधपुर

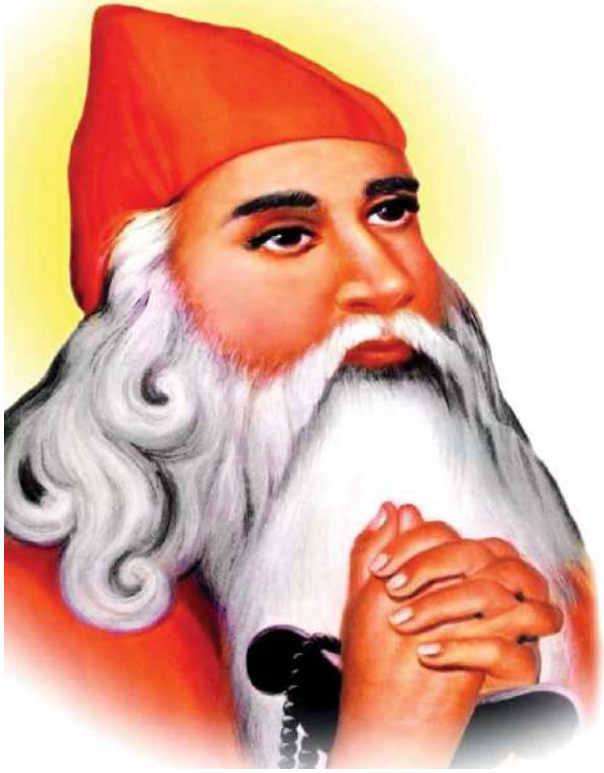

मोरे छाया न माया लोहू न मासूं रक्तूं न धातूं
मोरे माई न बापूं आपणे आपूं
रोही न रापूं कोपूं न कलांपू दुख न सरापूं
लोई अलोई त्यूंह तृलोई ऐसा न कोई
जपां मी सोई जिहिं जपे आवागवण न होई
मोरी आद न जाणत
महियल धूंवा बखाणत
उर्घ ढाकले तृसूलूं
आद अनाद तो हम रचीलो हमे सिरजीलो सै कोण
म्हे जोगी कै भोगी कै अल्प अहारी
ज्ञानी कै ध्यानी कै निज कर्मधारी
सोषी कै पोषी कै जल बिंबधारी
दया धर्म थापले निज बाला ब्रह्मचारी।

मराथल धोरे पर गुरु जांभोजी अपने शिष्यों सहित विराजमान थे, उस समय जोधपुर नरेश राव जोधा के भाई कान्हा का पुत्र उधरण अपनी सेना सहित वहां पहुंचे और गुरु जांभोजी को कुछ समय तक अपलक दृष्टि से देखते रहे लेकिन जब उन्हें गुरुजी की पीठ दिखाई नहीं तो उन्होंने जिज्ञासावश इसका कारण पूछा तो गुरु जांभोजी ने यह सबद सुनाया।

इस सबद में गुरु जांभोजी ने अपनी काया के निर्माण एवं स्वरूप के विषय में लोगों की जिज्ञासा शांत की है।

अनुवादः मेरी इस शुद्ध स्वरूप रूपी काया की न तो कोई छाया है और न ही माया रूपी प्रपंचात्मक अज्ञानता है। पंच भौतिक दिखाई देने वाली इस तत्व रूपी काया में रक्त, मांस, रज, धातु भी नहीं। यहां तक कि मेरे माता-पिता भी कोई नहीं है। मैं तो स्वयं प्रकाशित हूं। मेरे उपादान कारक कोई भी नहीं है। मैं तो स्वयं ही उत्पादित हूं। इस भैतिक जगत से परे हूं। आत्मा तथा तत्वरूपी शरीर से मैं अन्यत्र हूं। रोना, चिल्लाना, कुपित होना, संताप, दुख आदि सांसारिक प्रपंच मुझमें व्याप्त नहीं है। मैं किसी भी प्रकार के कोई शात से अभिभूत नहीं हूं तथा न ही किसी को कोई शाप देता हूं। मैं तीनों लोकों में ,लौकिक तथा लौकिक रूप से, अलिप्त भाव से व्याप्त हूं। ऐसा कोई भी स्थान नहीं है जहां मैं नहीं हूं। तब उधरण ने पूछा तो हमें किसका स्मरण करना चाहिए। इस पर गुरु जांभोजी ने कहा कि हमें सदैव उसका स्मरण करना चाहिए जिसके स्मरण से मृत्युरूपी आवागमन से मुक्ति प्राप्त हो सके। क्योंकि जो व्यक्ति जिसका स्मरण करता है वह उसी को ही प्राप्त होता है। सांसारिक लोग मेरी उत्पति के विषय में नहीं जानते हैं। ये लोग मेरे संबंध में व्यर्थ का धुआं जैसा अनुमान लगाते हैं क्योकि ये लोग अधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक शूलों से ढके हुए हैं। काम, क्रोध, लोभ आदि तीन तापों से संतृप्त हैं। मुमुक्षु प्राणी ही ज्ञान के द्वारा इन पर नियंत्रण कर सकता है।

जब इस संसार के आदि-अनादि सृजनकर्ता ही हम हैं तो हमें बनाने वाला कौन हैं। मैं योगी, भोगी तथा अल्पाहारी हूं। मैं ही ज्ञानी ध्यानी तथा स्वयं कर्म को धारण करने वाला हूं। मैं ही सभी का शोषक तथा पोषक हूं। अर्थात पालन-पोषण करता हूं। लौकिक तथा दृश्यमान संपूर्ण जगत में व्याप्त हूं।

जिस प्रकार जल में प्रतिबिंब पात्र के अनुसार दिखाई देती है। ठीक उसी प्रकार मेरा स्वरूप भी व्यक्ति की दृष्टि के अनुसार दिखाई देता है। लोग अपनी-अपनी दृष्टि एवं भावना के अनुसार मुझे अलग-अलग रूपों में भी देख सकते हैं। तुम तो मुझे दया धर्म की स्थापना करने वाला बाल ब्रह्मचारी रूप में ही समझो।

सत्संग की सीख जीवन में उतार हर किसी के प्रेरक बन गए पांचाराम काकड़

जोधपुर जिले के सामराऊ गांव निवासी पूर्व सैनिक हवलदार पांचाराम काकड़ का जीवन हम सबके लिए एक प्रेरणा से कम नहीं है। वे नित्य प्रति सबदवाणी का पाठ और द्विकाल संध्या आरती के साथ 29 नियमों पर आधारित जीवन जी रहे हैं। उन्हें 120 सबद कंठस्थ हैं। आज के भौतिकवाद के दौर में ऐसे गिने चुने लोगों का मिलना भी मुश्किल है। हमें उन सबकी जीवन यात्रा को जानकर कुछ संकल्प लेना चाहिए। नौ भाई बहनों में पांचवीं संतान पांचाराम काकड़ हैं। उनके पिता का नाम शोभाराम व माता रंगू देवी। उनका जन्म 4 दिसंबर, 1942 में हुआ। उन्होंने विद्याशाला जोधपुर जाकर आठवीं पास की थी। पड़ोसी गांव भाकरी के मास्टर माधवसिंह करनोत उन्हें पढ़ाई के लिए जोधपुर ले गए थे। बचपन में ऊंट दौड़ व घुड़सवारी के शौकीन रहे हैं। सामराऊ के काकड़ मूछों, मुरकी, गोखरू, कानपट्टी व मारवाड़ी वेशभूषा के लिए जाने जाते हैं। वे 4 दिसंबर, 1963 को EME में भर्ती हुए और 4 दिसंबर, 1987 को हवलदार पद से सेवानिवृत्त हुए। सेवारत रहते हुए कोई विशेष रूप से 29 नियमों का पालन नहीं कर पाते थे। फौज की नौकरी पूरी करके जब गांव लौटे तो आसपास का वातावरण दुर्व्यसनियों से घिरा हुआ पाया। उन्होंने सोचा कि नशेड़ियों की संगति से तो तन मन और धन की हानि व समाज में ग्लानि महसूस करनी भारी पड़ेगी। एक बार अपने मामा शंकरलाल खीचड़ राजाला सदरी वालों को अपनी आंतरिक पीड़ा बताई। उनकी प्रेरणा से आपने भागीरथदास आचार्य से जागरण का आयोजन करवाया। 1990 के बाद स्वामीजी के आशीर्वाद व जांभोजी की कृपा से पांचाराम काकड़ के जीवन में ऐसा बदलाव आया कि कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। वे स्वयं बताते हैं कि मेरे जीवन में यदि स्वामीजी का सान्निध्य नहीं मिलता तो मैं आज से 20 साल पूर्व संसार छोड़कर चला जाता। इन्होंने मेरी आयु, यश, धनसंपदा व ज्ञान ज्योति को बढ़ा दिया। वे 1990 से कितना भी जरूरी काम हो, सौ फीसदी जांभाणी जीवन जीने का समय निकाल लेते हैं। वे बताते हैं कि नित्य प्रति 120 शब्दों में से 40-40 शब्दों का पाठ करता हूं। जोत दर्शन, हरि नाम संकीर्तन, संध्या-वंदन, भजन-आरती, साखी गायन करना, आसपास जहां कहीं भी जागरण का होता है वहां पहुंचकर शब्दवाणी पाठ व हवन यज्ञ करवाने में सहभागी बन जाते हैं। जन्म संस्कार, विवाह संस्कार के दक्ष प्रशिक्षक बन गए हैं। केवल संस्कारित व सुगरों के हाथ का ही पहाल लेते हैं। पर्यावरण के प्रति रुचि के बदौलत आपने पिछले 30 वर्षों में अपने खेत में 120 से अधिक खेजड़ियों को पनपाया व पीपली का विवाह संपन्न करवाया। प्रतिदिन सूर्य अर्घ्य के साथ पीपली की परिक्रमा करते हैं। केवल जांभोजी द्वारा प्रणीत 29 नियमों की पालना में रुचि रखते हैं और कर्मकांड व पाखंडों से दूरी बनाए रखते हैं। जो विश्नोई लोग अज्ञानता में दूसरे देवी देवताओं की पूजा करते हैं, उनका विरोध करते हैं। खाली समय में जांभाणी साहित्य एवं धार्मिक सत्साहित्य का स्वाध्याय करते हैं। मुकाम, जांगलू, पीपासर, लालासर व झींझाले धोरे सहित बिश्नोई धर्म के धामों की 15 बार पैदल यात्राएं की। इनके पैदल साथी गंगाराम ढाढ़रवाल, जालाराम , हीराराम, मानाराम, बाबूराम ईशरवाल, बगड़ूराम भादू, बरसिंगाराम खिलेरी, हरदासराम गोदारा, जोराराम, सुखराम काकड़ आदि रहे हैं। गांव में निर्मित जंभेश्वर मंदिर हेतु चंदे-उग्राही में मुख्य भागीदारी निभाई और प्रतिवर्ष जागरण के मुख्य आयोजन कर्ता हैं। प्रत्येक अमावस्या को हवन यज्ञ संपन्न करवाते हैं। उन्होंने अकेले भोजन करना, मौसर का भोजन न करना, रात्रि कालीन भोजन से बचना, नशीली चीजों से दूरी व शुद्ध सात्विक जीवन बिताना खुद पर सख्ती से लागू किया है। काकड़ बताते हैं कि मेरा सौभाग्य ही है कि पुत्र-पुत्रियों के ससुराल नशामुक्त परिवार हैं। चेतनराम कड़वासरा भोजाकोर, माधाराम भादू जोलियाली, हीराराम जाणी कुड़ी व भूराराम गोदारा फतेहसागर वाले सगे-संबंधी नेमी परिवार गुरु जंभेश्वर की कृपा के बिना नहीं मिल सकते। इनके दो पुत्र व दोनों दामाद सरकारी सेवा में हैं। कहते हैं, भागीरथदास आचार्य का सान्निध्य नहीं मिलता तो मेरी जीवन यात्रा आधी अधूरी व निस्सार होती।

A Current Perspective of
Guru Jambheshwarji's Teachings

Indian philosophy and religion do not support the materialistic conception of nature which prevails in the west. The east believes in caring and giving protection to all life forms. This can be best explained by the example of the Bishnoi community, who have strong faith in all living entities like plants and animals. They religiously follow the twenty-nine principles (niyam) of their true & visionary Guru Jambheshwar-Ji Maharaj (Guruji/ Jambhoji). He was a symbol of non-violence, social reformer, environmentalist, love, and harmony. Jambhoji's way of thinking was scientific at that time also. In his principles, he concerned about ecology, nature, personal hygiene & health, human values, ethics, and spiritual or religious life. His principles are unique, simple, useful as well as very practical in today's contemporary global situation also. In the current scenario, our country is passing through the International Health Calamity in the form of Pandemics of Novel Corona Virus (COVID-19). We are following, the one of the simplest prevention measures proper hand-washing, social distancing and isolation as to fight against it. Guruji already told us about personal hygiene and asepsis in his third principle take a bath daily in the morning (PRATA KAL SNAN KARNA). In Shabad 104 Guru Ji gave top preference to bathing in the morning than any other charity/donations. His principles insist on cleanliness and maintenance of asepsis., He emphasized the same thing in other principles also, like cook food their own (APNE HATH SE RASOI PAKANA) and filter the water, milk, and firewood. In the last point, he focused on the living objects also that should not be harmed in any way by us. By doing so, we will be sure that the mores of purity and cleanliness maintained. Among the most evident issues, second one is the high number of maternal deaths in various countries of the world during or after pregnancy. Most maternal deaths can be reduced i) if all women properly cared ii) good hygiene is practiced, iii) and good quality health services are provided. Maternal health and newborn health are associated with each other. About 600 yrs. ago, Guruji told in his teachings that you all should observe (TIS DIN SUTAK RAKHANA), 30 days state of ritual impurity after birth and keep a woman away from household activities for 5 days during menstrual period also (PANCH DIN KA RAJASWALA RAKHNA). The scientific reasons behind this were, during these stages the natural defence of the reproductive system is lost and woman is more vulnerable to contact infection. So, she is advised to lead a segregated life and take rest, lest she catches the infection. He knew the importance of all these practices at that time, which we are trying to follow and accept these days.

(**Dr. Mamta Bishnoi**
Assistant Professor, Delhi Institute of Pharmaceutical Sciences and Research, New Delhi)

The twenty-eighth principle of guruji prohibits the Bishnoi community to eat non-
vegetarian food (MANS NAHIN KHANA). It has been scientifically proved that the animals have high Tama components in their bodies and the non-veg diet increases it in humans also.Ongoing investigations have connected that non-veg diet utilization triggers the danger of diseases. The unhygienic breeding, feeding, and slaughtering of animal foods may lead to depositions of the high level of carcinogens also.

Globally, more than 264 million people of all ages suffer from depression and around 1 lac people die due to suicide every year. People who believe in our culture's
psychotherapeutic relationship or the 'guru-chela relationship' experience little or no stress. Somewhere only Guruji knew how to help people, who were suffering that time from draught in western Rajasthan area with the external invaders, religion conversions as well as internal bad practices. He gave a principle to pray two times a day (DWI KAL SANDHYA KARO), a symbol of the whole life cycle that denotes after every evening morning comes. Such type of prayers helped the individual to combat depression that they're not alone. He taught people that God is always with us and we would be able to ignore the negative sensations of stress and anxiety.

Guruji explained the importance of simple living and high thinking in his various
shabads by saying "JE KOI AVE HO HO KARTE, PANI HUY JAYEO, VAD VIVAD FITA
KAR PRANI, SHEEL, SANTOSH, SHUCHI PIARO, JEEYAN NE JUKTI AUR MARIYAN NE MUKTI, BHARMI BHULA BAD VIVAD, ACHAR VICHARNA JANATSWAD, EKSHMA HIRDE DHARO, etc.

In the other principal, Guruji stressed the people to perform hawan (PRATA KAL HAWAN KARNA), which is also an excellent mode of environmental purification and also helpful in mental illness due to its aromatherapy. It was well said in vedas also, "sughandhim puushtivardhanam" that aroma gives rise to good health. The routine of
performing hawan might keep the threshold value of the therapeutic components in the body and help in preventing anxiety. Hawan also balances the CO2 and O2 levels in the atmosphere scientifically and medicinal-smoke emanated from hawan-samagri showed interesting inhibition effects on the aerial bacterial population also.

Around six centuries ago, Guruji knew the importance of trees so he mentioned in his teachings (RUNKH LILA NAHI GHAAVE), don't cut green trees as it will disturb the balance of nature so Bishnoi's buried their dead body in the earth. Now everyone feels and talks about the danger of global warming and desertification. Guruji anticipated this problem and said many times in his shabads "KANY KATI BAN RAYO" for environmental conservation. How religiously Bishnoi follows his teachings can be understood by the following example. In 1730 AD, A Bishnoi woman Amrita Devi (Beniwal), with 363 Bishnoi sacrificed their lives for trees by saying 'Sar santey rukh rahe to bhi sasto jaan' So, here is a need to re-explore this vast treasure of knowledge and follow Jambhoji's teachings religiously which is culturally relevant and useful for the whole word. There is no doubt that the Bishnoi thought has made one of the greatest contributions not only in eco regeneration but in the future also, it will be extremely significant for inspiring people to take care of all living ones.

आजादी के परवाने- मेवाड़ी विश्नोई दंपती प्यारचंद और भगवती विश्नोई

प्यारचंद विश्नोई राजस्थान के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने नमक सत्याग्रह, बिजौलिया के किसान आंदोलन, मेवाड़ में प्रजामंडल के उत्तरदायी शासन सत्याग्रह व अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया था। इस कारण उन्हें करीब 5 साल जेलों में बिताने पड़े। अंग्रेजों से लोहा लेने वे एक बार महीनों तक ग्वाले के वेश में आजादी की अलख जगाते रहे। इनकी देश भक्ति देख बाद में पत्नी भगवती ने भी राष्ट सेवा का मार्ग चुन लिया। भगवती को भी तीन बार जेल जाना पड़ा। दो बार मेवाड़ से बाहर भेज दिया गया। ऐसे में भूमिगत रहते हुए काम करती रहीं। प्यारचंद मेवाड़ व उस वक्त कांग्रेस में बड़े प्रभावशाली थे। वे चाहते तो बड़ा पद ले सकते थे लेकिन उन्होंने जीवंत पर्यन्त राष्ट सेवा को ही अपना लक्ष्य बनाए रखा।

"मैं देश के लिए अर्पित होने सत्याग्रह में जा रहा हूं। जीवित लौटा तो ठीक है, नहीं तो आपकी सेवा के लिए मेरा छोटा भाई देवीचंद तैयार है। मेरा विवाह हो गया है, किंतु यदि मैं वापस नहीं लौटा तो मेरी पत्नी का पुनर्विवाह करा देना, ये चंद लाइनें उस पत्र की है, जो वर्ष 1930 में मेवाड़ राज्य के प्रमुख क्रांतिकारी प्यारचंद विश्नोई ने उदयपुर में रहते अपने पिता नारायणजी को लिखा था। यहीं से वे देश के लिए पूरी तरह समर्पित हो गए। उन्होंने कई आंदोलनों व सत्याग्रह को नेतृत्व प्रदान किया। अंग्रेजों की यातनाएं सहीं। बार-बार जेल गए। एक बार उन्होंने अपने पास पड़े अतिरिक्त कपड़े और सामान को एक सहपाठी के साथ अपने गांव पुर भिजवाया। घरवालों ने सोचा कि प्यारचंद की मृत्यु हो गई है, घर में शोक का वातावरण सा बन गया लेकिन सहपाठी ने परिजनों की शंका का तुरंत ही निवारण कर दिया।

भीलवाड़ा जिले के पुर निवासी प्यारचंद विश्नोई ने अंग्रेजों से लोहा लेने में खास भूमिका निभाई थी। मेवाड़ क्षेत्र में आंदोलनकारियों का नेतृत्व करने वालों में वे प्रमुख थे। यही वजह है कि आज भी बड़े फक्र के साथ इनका नाम राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानियों में लिया जा रहा है। यह विश्नोई समाज के लिए भी बड़ा गर्व और गौरव है। उनका जन्म नारायणजी विश्नोई के घर हुआ था। बचपन से ही बड़े तेजस्वी रहे। मिडिल तक भीलवाड़ा में पढ़ने के बाद उदयपुर स्थित ब्रह्मचार्यश्रम के छात्रावास में रहकर हाईस्कूल में पढ़े। यहां रहते साथी स्टूडेंट इनकी दिनचर्या से बहुत प्रभावित हुए। सुबह जल्दी उठकर स्नान, हवन व भजन आदि संस्कारों को यहां पौषित करते गए। कुश्ती और व्यायाम में खास रुचि थी। यहां रहते हुए ही वे देश भक्ति की ओर मुड़े। इनके पिता के मित्र पंडित भूरीलाल उपाध्याय, जो गांधी भक्त थे, के संपर्क में आए और राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत साहित्य पढ़ने लगे। इसी बीच परिवार के आग्रह पर शादी के लिए गांव आना पड़ा। 25 वर्ष की आयु में वे भगवती विश्नोई के साथ परिणय सूत्र में बंध गए। मगर, इनके मन में देश सेवा भरी थी। वे उदयपुर में संचालित भारत सेवा समिति के स्काउट बन गए। फिर मेवाड़ राज्य के पहले रोवर बने। बरसों तक उदयपुर व अजमेर में खादी का काम किया। उन्हें कभी छह महीने तो कभी इससे ज्यादा समय के लिए इन्हें जेल में डाला गया। लेकिन इन्होंने एक बार भी पुलिस से माफी नहीं मांगी। उल्टे इंकलाब जिंदाबाद के नारे लगाने शुरू कर देते थे, माफी मांगने से इनकार करने पर जेल में उन्हें बिजौलिया राव के घोड़ों के लिए प्रतिदिन तीन मण चने दलने पड़ते थे। जेल अधिकारियों में इनका खौफ इतना था कि हजामत करते वक्त इनके हाथ पीछे बांध दिए जाते थे। जेलों में लोकनायक जयनारायण व्यास व माणिक्यलाल वर्मा के साथ रहे।

इनके जीवन की वो बातें जो हमें सीखनी ही चाहिए

1. देश को गुलामी की बेड़ियों से मुक्ति दिलाने के संघर्ष में उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था। बहुत सी जगह गए, आंदोलनों का नेतृत्व किया लेकिन कैसी भी परिस्थिति में वे गुरु जंभेश्वर के बताए रास्ते से नहीं डिगे। हर कदम पर उन्होंने 29 नियमों को अपनी ताकत बनाए रखा।

2. उस दौर में उन्होंने सामाजिक कुरीतियों को त्यागने की हिम्मत दिखाई थी। माताश्री झमकू बाई व पिता श्री नारायणजी के निधन के पीछे मृत्युभोज नहीं किया। बल्कि खुद को मिली स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सम्मान पेंशन के आठ हजार रुपयों से पिता की स्मृति में पुर गांव में श्री नारायण पुस्तकालय वाचनालय भवन का निर्माण करवाया। इसे आज भी भीलवाड़ा नगर परिषद चला रही है।

नई पीढ़ी के लिए जरूरी है यह जानना...

जनसंघ के टिकट पर पंजाब विधानसभा में बिश्नोई समाज के पहले विधायक बने सहीराम धारणियां

98 वर्षीय धारणियां 29 नियमों की पालना पर आज भी अडिग, बिना चश्मा पढ़ लेते हैं पुस्तक, अखबार

अबोहर. बिश्नोई समाज के पहले विधायक रहे हैं सहीराम धारणियां। उन्होंने 1951 में देश के पहले चुनाव में अबोहर सीट से निर्दलीय चुनाव लड़ा लेकिन सफलता नहीं मिली। फिर 1957 में जनसंघ की ओर से मैदान में ताल ठोकी। इस चुनाव में वे पहले से दोगुने वोटों से जीते। उस समय कांग्रेस सरकार बनी लेकिन ये विपक्ष में रहे और पंजाब विधानसभा में बिश्नोई समाज के पहले विधायक बने। तब पंजाब और हरियाणा एक ही थे। सहीराम धारणियां बताते हैं कि उनका जन्म 12 जनवरी 1922 को गुलाम भारत के भावलनगर के गांव तालिया में हुआ। अब यह गांव पाकिस्तान में है। पढ़ाई के दिनों की बात याद करते हुए धारणियां बताते हैं कि वे लाहौर के लॉ कॉलेज में थे। वहीं हॉस्टल रहकर पढ़ाई करते थे। देश आजाद हुआ तब एलएलबी की परीक्ष होनी थी। हॉस्टल की छत पर ही सोते थे। 1947 में अगस्त 13-14 की रात को सोए तो सब ठीक था। सुबह उठकर पता चला कि लाहौर को पाकिस्तान के अलग देश में शामिल कर दिया गया है। उसी दिन दंगे भी शुरू हो गए। मुस्लिम और हिंदुओं में भारत पाक में आने जाने को लेकर झगड़े हुए। वे अपने गांव तालिया पहुंचे तो वहां सभी लोग एकत्रित होने लगे। इन गांवों में ज्यादातर बिश्नोई समाज के लोग थे। वे सबसे ज्यादा पढ़े होने के कारण उन्होंने दूसरों से संपर्क करने का काम शुरू किया। तब उन्हें पता चला कि राजस्थान के करणपुर में करणपुर थेहड़ी के पास एक पुल अभी भी खुला है। दूसरी ओर पंजाब एरिया में पठानों ने लूट के लिए सारे रास्ते बंद कर दिए थे। अधिकतर जगह मुसलमान व हिंदुओं की झड़प हो रही थी। बाद में सूचना मिली कि भावलपुर स्टेशन पर सिखों पर मुस्लिमों ने हमला कर दिया। 3-4 दिन आसपास के गांवों से लोग राजस्थान की ओर ऊंट गाड़ियों व जत्थों पर रवाना हो गए। बमुश्किल एक सप्ताह बाद राजस्थान में प्रवेश कर कई गांवों में गए लेकिन यहां उन्हें जमीन नहीं मिली। सालों तक अलॉटमेंट के लिए चक्कर काटे। वहीं लाहौर लॉ कॉलेज पाक में चले जाने से शिमला में बने पंजाब यूनिवर्सिटी के लॉ कॉलेज में 1948 में एलएलबी पास की। 1958 में हिंदी आंदोलन में हिस्सा लिया और जेल गए। इसके बाद बिश्नोई महासभा की स्थापना की और समाजसेवा में लग गए। वे आज भी सुबह उठकर बिना चश्मा के अखबार पढ़ते हैं।

10 प्रतिशत और रह जाएंगे कुंवारेः लड़के की चाहत से लैंगिक संतुलन बिगड़ रहा

नई दिल्ली. लड़कियों के बजाय लड़कों को प्राथमिकता देने के कारण कुछ देशों में महिलाओं और पुरुषों के अनुपात में बड़ा बदलाव आया है। इस असंतुलन का विवाह प्रणालियों पर असर देखने को मिल रहा है। भारत में लड़कियों की तुलना में लड़कों की संख्या बढ़ने संबंधी स्थिति 2055 में सबसे खराब हो सकती है। तब भारत में 50 की उम्र तक एकल रहने वाले पुरुषों के अनुपात में 10 फीसदी तक वृद्धि हो सकती है। इधर, दुनियाभर में पिछले 50 साल में 14.26 करोड़ महिलाएं लापता हो गईं। इनमें से एक तिहाई, यानी 4.58 करोड़ महिलाएं सिर्फ भारत की हैं। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार लापता महिलाओं की संख्या चीन और भारत में सबसे ज्यादा है। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) द्वारा 30 जून को जारी रिपोर्ट 'वैश्विक आबादी की स्थिति 2020' के अनुसार 50 साल में लापता महिलाओं की संख्या दोगुनी हो गई है। यह संख्या 1970 में 6.10 करोड़ थी, जो 2020 में 14.26 करोड़ हो गई। 2020 तक भारत में 4.58 करोड़ व चीन में 7.23 करोड़ महिलाएं लापता हुईं। प्रसव के पहले या प्रसव के बाद लिंग निर्धारण के संचयी प्रभाव के कारण लापता लड़कियों की संख्या भी रिपोर्ट में शामिल है। इसके अनुसार 2013 से 2017 के बीच भारत में करीब 4.60 लाख बच्चियां हर साल जन्म के समय लापता हो गईं। एक विश्लेषण के अनुसार कुल लापता लड़कियों में से करीब दो तिहाई मामले और जन्म के समय होने वाली मौत के एक तिहाई मामले लैंगिक आधार पर भेदभाव के कारण लिंग निर्धारण से जुड़े हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि लैंगिक भेदभाव की वजह से (जन्म से पूर्व) लिंग चयन के कारण दुनियाभर में हर साल लापता होने वाली अनुमानित 12 लाख से 15 लाख बच्चियों में से 90 से 95 प्रतिशत चीन और भारत की होती हैं। प्रतिवर्ष जन्म की संख्या के मामले में भी ये दोनों देश सबसे आगे हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि सरकारों ने लिंग चयन के मूल कारण से निपटने के लिए कदम उठाए हैं। भारत और वियतनाम ने लोगों की सोच को बदलने के लिए मुहिम शुरू की है।

अब घर बैठें बनवाइये सोशल मीडिया डिजाइन/पोस्टर

आकर्षक, नवीन व मनमोहक डिजाइनों से कीजिए

सोशल मीडिया प्रचार-प्रसार.....

डिजाइन बनवाने के लिए आज ही सम्पर्क करें:-

ओम प्रिंटिंग प्रेस

सुपर मार्केट, बद्री चौराहा, लोहावट, जिला-जोधपुर

CONTACT FOR MORE DETAILS CALL:- 9001800789

सोशल मीडिया पोस्ट के लिए मासिक पैकेज उपलब्ध

Our Services

Shadi Card, Banner, Visiting Card, Bill Book, Letter Pad, Pamplate, Social Media Poster, All Types Of Designing, All types Of Printing

ONLINE PAYMENT METHOD:-

GOOGLE PAY, PHONE PAY, PAYTM

9001800789

SUNIL KANWA

PROFESSIONAL GRAPHICS DESIGNER

Mob. 9001800789

Follow me on Sunny Bishnoi Bishnoi_saab_007 Sunil29k

RNI. भारत सरकार द्वारा पंजीकृत संख्या RAJMUL/2016/70544

IF UNDELIVERED PLEASE RETURN TO

समराथल न्यूज़ पोस्ट | कार्यालयः प्लॉट नं. 30, थोरियों की ढाणी, पाल बालाजी, पाल रोड, जोधपुर राजस्थान

To, ...
Village.....
Post.....
Dist.....Pin.....